41

सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार-2000 द्वारा सम्मानित

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रकाशक

श्री अग्रसेन समिति दिल्ली

1958—मुल्तानी मोहल्ला, रानीबाग

दिल्ली—110034 दूरभाष : 7020214

सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मान समारोह पर हार्दिक शुभकामनाएं

"मैंने श्री विष्णु जी को वैश्य संगठन सभा, दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन तथा अग्रसेन समिति में निकट से कार्य करते हुए देखा है। वे जिस कार्य को हाथ में लेते हैं। उसे पूरी तत्परता और लगन के साथ पूरा करते हैं। कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने और उसे व्यावहारिक रूप देने में वे सिद्धहस्त हैं।

उद्योगपति

राधाकृष्ण गुप्ता चश्मे वाले

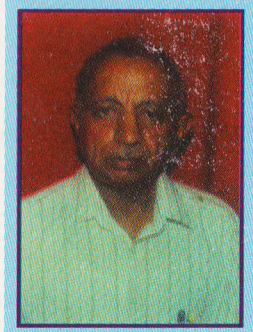

संस्थापक प्रधान : श्री अग्रसेन समिति दिल्ली

ट्रस्टी : महाराजा अग्रसेन आश्रम, हरिद्वार व वृन्दावन

ट्रस्टी : वैश्य एजूकेशनल सोसाइटी, रोहतक

ट्रस्टी : रामजस फाउन्डेशन, नई दिल्ली

ट्रस्टी : अग्रवाल धर्मशाला, मॉडल बस्ती

इनके अतिरिक्त आप अनेकों सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक संस्थाओं से भी सम्बन्धित हैं।

Indian Optics Pvt. Ltd.

SUPROL®

111, Model Basti, New Delhi-110 005 (India)
Phones : +91 11 3673251, 3670775, 3622366
Fax : +91 11 3511660 E-mail:deveshgupta@suprol.com
Website:http://www.suprol.com
B.O. : E/14, Ist Floor, Nirav Mansion, Bhangwadi, Kalbadevi Road, Mumbai-400 002 Tel. : 2001189 Telefax : 2065491

॥ श्री अग्रसेन जयते ॥

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

सम्पादक

चन्द्र मोहन गुप्ता

परामर्शक

चित्रसेन गुप्ता, शिवदत्त गुप्ता
गिरिलाल गुप्ता, राधाकृष्ण गुप्ता

प्रकाशक

श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली

1958–मुल्तानी मोहल्ला, रानीबाग
दिल्ली–110034 दूरभाष : 7020214

अग्रवाल झंडा गान

अग्रकवि : डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त
1958, मुल्तानी मोहल्ला, रानी बाग,
दिल्ली-34 दूरभाष : 7020214

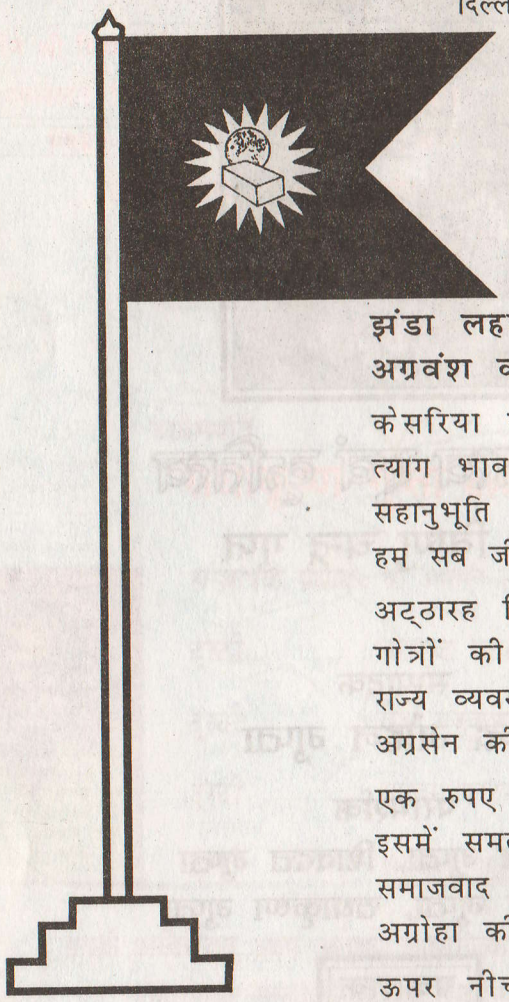

झंडा लहर लहर लहराए,
अग्रवंश की कीर्ति सुनाए।

केसरिया रंग बहुत सुहाए,
त्याग भाव का पाठ पढ़ाए।
सहानुभूति व प्रेम त्याग को,
हम सब जीवन में अपनायें।।1।।

अट्ठारह किरणों का गोला,
गोत्रों की बोली है बोला।
राज्य व्यवस्था को बतलाकर,
अग्रसेन की याद दिलाए।।2।।

एक रुपए संग ईंट जड़ी है,
इसमें समता बहुत बड़ी है।
समाजवाद की यही कड़ी है,
अग्रोहा की याद दिलाए।।3।।

ऊपर नीचे कूल बने हैं,
मिले बीच अनुकूल घने हैं।
ऊंच-नीच का भेद मिटाकर,
समता हम जीवन में लाएं।।4।।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा मान्य

अध्यक्ष की कलम से.....

– चित्रसेन गुप्ता
एडवोकेट
प्रधान, श्री अग्रसेन समिति दिल्ली
एवं संगठन मंत्री अग्रवाल सभा, पश्चिम विहार

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त श्री अग्रसेन समिति दिल्ली के महामंत्री हैं। समिति वर्षों से अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल पर ज्ञातव्य एवं संग्रहनीय प्रकाशन करती रही है। 13अक्टूबर 2000 को अग्रोहा में डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त को सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार 2000 से सम्मानित किया जा रहा है। उनका सम्मान नि:स्वार्थ एवं समर्पित कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने वाला है। इस पुरस्कार के अंतर्गत 51000/-, शॉल, प्रतीकचिह्न, प्रशस्ति-पत्र व श्रीफल दिया जाता है।

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त की कविताएँ ओजपूर्ण है तथा लेखन ज्ञानवर्द्धक है। अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल पर आपने भरपूर प्रचार-प्रसार कार्य किया है। आप अग्रवाल झंडा गान के रचयिता हैं, कुशल संगठनकर्ता हैं।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के बम्बई अधिवेशन में 29-4-1990 को आपको समाज सेवार्थ तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

11 अक्टूबर 1992 को अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा साहित्यिक सेवार्थ ट्रस्ट के प्रधान श्री सुभाष गोयल ने अग्रोहा धाम में सम्मानित किया था। श्री विष्णु जी पद एवं नाम की चिन्ता किये बिना निरंतर सेवा कार्य में लगे रहते हैं।

इस अवसर पर **व्यक्तित्व एवं कृतित्व** पुस्तिका का प्रकाशन कर रहे हैं। इसमें आपके मित्रों व शुभ चिन्तकों के उदगार, चित्रमय परिचय एवं उनकी प्रेरक कविताओं का प्रकाशन किया जा रहा है।

पुस्तिका में अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल सम्बन्धी प्रमुख ज्ञातव्य एवं प्रेरक सामग्री प्रस्तुत की जा रही है। आशा है कि इससे समाज बंधुओं को प्रेरणा मिलेगी।

हम उनके यशस्वी एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं। ❑❑

एक परिचय

अग्रभूषण

डॉ. विष्णुचन्द्र गुप्त

अग्रवाल समाज के सुपरिचित कार्यकर्त्ता बहुमुखी जागरूक कवि व लेखक श्री विष्णुचन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य के कर्मठ, उत्साही योग्य सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं। आपका जन्म 12 मार्च 1934 में पल्ला ग्राम निवासी लाल हुकमचन्द जी के यहां हुआ। दिल्ली से हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आपने पंजाब विश्वविद्यालय से प्रभाकरण स्नातक की उपाधि प्राप्त की। सन् 1953 में अध्यापन प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् आपने अध्यापन कार्य प्रारंभ किया तथा 39 वर्ष राजकीय विद्यालय में अध्यापन कार्य के उपरांत 1994 में सेवानिवृत्त हुए।

श्री गुप्त जी प्रारंभ से ही सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि लेकर सक्रिय योगदान देते रहे हैं। 1953 में आपने समाज शिक्षा केन्द्र के माध्यम से प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का कई वर्षों तक सफल आयोजन किया। समाज शिक्षा केन्द्र में इंचार्ज रहकर जगह-जगह प्रौढ़ शिक्षा कक्षायें प्रारम्भ करा कर एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक कार्य किया। वाद-विवाद ग्रुप के संयोजक रहे तथा दिल्ली स्तरीय प्रतियोगिता में वाद-विवाद में द्वितीय पारितोषिक प्राप्त किया।

सन् 1958 में दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सदर बाजार मंडल के मंत्री बने तथा 1968 तक उस पद पर कार्य करते रहे। आपके द्वारा अनेक कवि सम्मेलन, हिन्दी व्यवहार प्रदर्शनी तथा हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए एक सुसंगठित संगठन के साथ सराहनीय सेवा की गई आप हिन्दी प्रचार, प्रसार और व्यवहार के माध्यम से सदैव दृढ़ प्रतिज्ञ एवं अग्रगण्य रहे हैं।

सन् 1959 में आर्य समाज, सदर बाजार के सर्वसम्मति से मंत्री चुने गए तथा सहयोग एवं परिश्रम के योगदान से आर्य समाज की अभूतपूर्व सेवा की। आप 1945 से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वितीय वर्ष प्रशिक्षित स्वयं सेवक हैं। सन् 1967 में विश्व हिन्दू परिषद् सदर बाजार क्षेत्र के संयोजकत्व का भार आपको सुपुर्द किया गया। इस अवधि में आपने संगठन कार्य का विस्तार किया।

व्यक्ति समाज की इकाई है, अतएव समाज के संरचनात्मक निर्माण में इस व्यक्ति का महत्वपूर्ण योगदान है। इसी धारणा को दृष्टिगत रखते हुए श्री गुप्त समाज से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। समाज के सभीं वर्गों और क्षेत्रों में बिना किसी भेदभाव के कार्य करते हुए श्री गुप्त जी सर्वप्रिय रहे हैं। देश पर विदेशी आक्रमणों के अवसर पर नागरिक सुरक्षा कार्यक्रमों में भाग लेना, बाढ़ पीड़ितों की सहायता

कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना क्षेत्र निवासियों की सुविधा के लिए सफाई, जल तथा वितरण आदि कार्यों की व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र कराने में विशेष कुशल हैं, सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत रायफल चलाना, अग्निशमन, बचाव कार्य, प्राथमिक चिकित्सा आदि में सिद्धहस्त हैं।

सन् 1962 में श्री गुप्त ने वैश्य संगठन सभा सदर बाजार के गठन के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया तथा वर्षों तक मंत्री रहकर सभा का कुशल संचालन किया और सभा को नई दिशा प्रदान की। सन् 1966 में श्री अग्रसेन युवक मंडल का गठन कर युवकों में सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा जागृत की तथा दहेज विरोधी अभियान, मद्यपान तथा भंगड़ा विरोधी कार्यक्रमों की संरचना की। आप कई वर्षों तक इसके संरक्षक एवं अध्यक्ष रहे। इन्हीं दिनों आपने भारतीय स्वयं सेवक मंडल के गठन में सहयोग दिया तथा मंत्री पद को सुशोभित किया। मंडल का पंजीकरण कराकर धार्मिक एवं सामाजिक अवसरों पर प्रबंध, व्यवस्था एवं सेवा कार्य हेतु युवकों को संगठित किया।

श्री गुप्त ने मोहल्ला, पंचायत, सुधार समिति आदि जैसी अनेक छोटी-बड़ी समितियों और संस्थानों के माध्यम से जनसेवा कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 1968 में आप त्रिनगर में आये और यहां भी जन सहयोग कर भारतीय साहित्य संस्थान के मंत्री पद पर रहकर समाज सेवा में लग गए। त्रिनगर (रामपुरा) अग्रवाल सभा के मंत्री पद पर रहकर त्रिनगर के अग्रवाल समाज को संगठित कर समाज के असहाय बंधुओं के लिए महत्वपूर्ण सहायता कार्य सम्पन्न किए जैसे-विधवाओं को सिलाई की मशीनें, निर्धन छात्रों को पुस्तकें, वर्दी तथा नौकरी दिलाने की व्यवस्था, निर्धन कन्या विवाह सहायता आदि। सभा के माध्यम से ही एक प्रेरक तथा संग्रहणीय स्मारिका का प्रकाशन किया। त्रिनगर के अग्रवाल संगठनों को एक मंच पर लाने के लिए किए गए प्रयत्नों में समर्पित भूमिका निभाई। इसके पश्चात् श्री गुप्त जी अग्रवाल समाज त्रिनगर के संस्थापक सदस्य तथा उप-महामंत्री रहे।

1975 में श्री विष्णुचन्द्र गुप्त ने अग्रवाल समाज को प्रकाशनों तथा रचनात्मक कार्यों से प्रेरित करने की दृष्टि से श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली की स्थापना की। समिति के माध्यम से कई प्रकाशन आपने किए हैं जिनमें अग्रकाव्य भी सम्मिलित हैं। अग्रकाव्य अग्रवाल बंधुओं की पहली काव्य पुस्तक कही जा सकती है। श्री अग्रसेन समिति के माध्यम से बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ स्व. डॉ. नरेश चन्द्र गुप्त तथा अन्य डॉक्टरों का सहयोग प्राप्त कर चिकित्सा शिविर का आयोजन किया।

कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री गुप्त जी समाज सुधार तथा अन्य सेवा कार्य करते हुए साथियों को प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि यदि अमुक कमियां या अभाव न होते तो संगठनों के बनाने की ओर विचार तथा कार्य करने की आवश्यकता ही

क्या थी। वे करनी और कथनी में साम्य बनाये रखते हैं। किसी छोटे से छोटे कार्य, दरी बिछाने से लेकर मंच संचालन, भाषण तथा कविता व्यंग्य विनोद आदि बड़े-बड़े कार्यों को सम्पन्न करने की क्षमता रखते हैं।

मानव संकीर्तन मंडल त्रिनगर के माध्यम से कीर्तन इत्यादि का भी आयोजन कर जनमानस को जीत लिया। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन में 1968 से ही आप कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं। आप दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन के संस्थापक मंत्री हैं तथा अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के गठन के समय से ही कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं। 1975 में त्रिनगर में दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन, दयानंद मंडल का गठन किया गया और आप इसके सर्वसम्मति से मंत्री चुने गए। मंडल के माध्यम से क्षेत्र में कवि-सम्मेलन, हिन्दी व्यवहार प्रदर्शनी तथा साहित्यिक गोष्ठियां, तुलसी जयंती तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर कार्यरत रहे।

रूचियाँ : समाज सेवा के साथ-साथ श्री गुप्त जी खेल-कूद, तैराकी, घुड़सवारी, ड्राईविंग, फोटोग्राफी, फायरिंग का शौक तथा अभ्यास रखते हैं। होम्योपैथिक चिकित्सा में भी आप रुचि रखते हैं तथा धर्मार्थ सेवा कर रहे हैं। हिन्दी, इंगलिश, संस्कृत आपकी शैक्षिक भाषायें हैं। आपने गुरमुखी तथा उर्दू भी सीखी है। कवि, लेखक अथवा समाज सुधारक योगी, प्राय: यायावार प्रकृति के होते हैं और होना प्राय: आवश्यक भी है क्योंकि बिना अनुभव आभास के दूसरों के दर्द का अनुभव होना प्राय: मुश्किल ही है, अतएव भ्रमण आपका प्रिय शौक है।

विशेष सम्मान

समाज ने समय-समय पर श्री विष्णचन्द्र गुप्त को समाज सेवार्थ शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न आदि से सम्मानित किया है।

सन् 1981 - कजरारी हिन्दी त्रैमासिक द्वारा सम्मान में सम्पूर्ण अंक का प्रकाशन एवं अभिनंदन समारोह किया गया। अंक का विमोचन तत्कालीन नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण बंसल ने किया।

सन् 1987- वैश्य संगठन सभा द्वारा रजत जयंती समारोह में संस्थापक सदस्य के रूप में सम्मानित किया गया।

सन् 1988 - हिन्दी साहित्य सम्मेलन दयानंद मंडल द्वारा हिन्दी सेवार्थ सम्मानित किया गया।

14 मार्च 1990 - अग्रोहा तीर्थ हिन्दी मासिक द्वारा सम्मान में कविताओं उद्‌गार एवं गतिविधियों पर सम्पूर्ण अंक का प्रकाशन एवं अभिनन्दन किया गया। अंक का विमोचन सुप्रसिद्ध नेता श्री रामेश्वरदास गुप्ता द्वारा किया गया।

29 अप्रैल 1990 - अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के बम्बई अधिवेशन में उपराष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा समाज सेवार्थ सम्मानित किया गया।

11 अक्टूबर 1992 - अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा साहित्यिक सेवार्थ, अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुभाष गोयल ने अग्रोहा धाम में सम्मानित किया।

31 मार्च 1994 - राजकीय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, मोरी गेट द्वारा सेवानिवृत्त के अवसर पर सम्मान।

8 फरवरी 1998 - मंगल मिलन पत्रिका द्वारा धर्मभवन में आयोजित रजत जयंती समारोह के अवसर पर अग्र-कवि एवं लेखक के रूप में सम्मानित किया गया।

सितम्बर 1998 - वैश्य संगठन सभा, सदर बाजार द्वारा अग्रसेन जयंती समारोह के अवसर पर दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री चरतीलाल गोयल द्वारा **अग्रभूषण** की उपाधि से सम्मानित किया गया।

29 जनवरी 1999 - श्री हरलाल गर्ग परिवार संघ के समारोह में सपत्नीक अभिनंदन किया गया।

29 मार्च 1999 - अग्रवाल निदेशिका समिति द्वारा धर्म भवन में आयोजित समारोह में सम्मानित किया गया।

प्रकाशन–संपादन एवं लेखन

अग्र प्रकाशन : अग्रकाव्य (अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल एवं सामाजिक विषय पर 120 कविताओं का पांच खण्डों में सर्वप्रथम प्रकाशन)। अग्रोहा दर्शन, अग्र गीतिका, अग्रगान, अग्रविभूतियों का परिचय विशेषांक।

धार्मिक प्रकाशन : उपासना, आराधना, अर्चना, महावीर हनुमान, दुर्गा कवच, गीता ज्ञान यज्ञ स्मारिका।

पत्रकारिता

कजरारी त्रैय मासिकी का दस वर्ष तक संपादन।
अग्रोहा तीर्थ मासिका का 15 वर्ष तक संपादन।
युवा अग्रवाल साप्ताहिक का संपादन, उप-संपादक के रूप में।
अनेक सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर लेख एवं कविताएं प्रकाशित।

स्मारिका प्रकाशन : अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल व समाज पर गोत्र व्यवस्था तथा अन्य गतिविधियों से युक्त प्रेरक एवं संग्रहणीय बीस से अधिक स्मारिकाएं छापकर नि:शुल्क वितरित की गई। गीता ज्ञान एवं नैतिक विषयों पर भी प्रकाशन किए गए।

सेवा कार्य : निर्धन छात्रों को पाठ्य सामग्री, निर्धन कन्याओं के विवाह में आर्थिक सहयोग, प्याऊ का निर्माण, बेकार युवाओं को नौकरी दिलाने में सहायता एवं बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ चिकित्सा शिविर का आयोजन।

चन्द्र मोहन गुप्ता
संपादक
दूरभाष : 7242140 21/33, शक्ति नगर, दिल्ली-7

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त की वंशावली

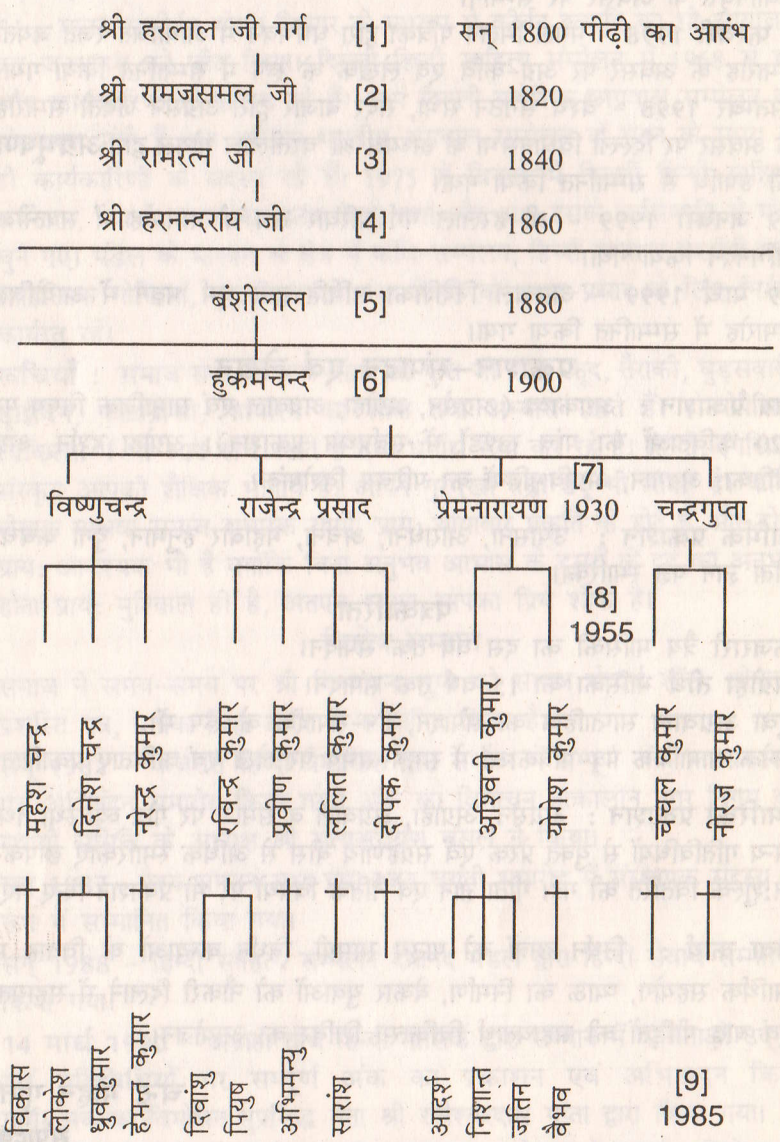

समाज के विभिन्न महानुभावों द्वारा डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त के व्यक्तित्व पर उद्‌गार

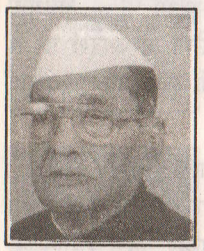

बनारसी दास गुप्ता—सांसद, मुख्य संरक्षक, अ. भा. अ. स.

एक सफल कवि और साहित्यकार होने के नाते वे अपनी कविता द्वारा समाज को कुरीतियां त्यागने और संगठित बनाने में प्रेरित करते रहते हैं। मुझे अनेक बार समारोह में उनको सुनने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैं उनके विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ।

रामेश्वर दास गुप्त—संस्थापक, अ. भा. अग्रवाल सम्मेलन

1975 में अ. भा. अ. सम्मेलन की स्थापना के बाद आप इस संस्था के साथ जुड़ गए। सम्मेलन में आपने अनेक पदों पर कुशलता पूर्वक कार्य किया। दिल्ली प्रादेशिक अ. स. में भी आप अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। आप एक कर्मठ और लग्नशील कार्यकर्ता हैं। आपने एक लेखक तथा कवि के रूप में अच्छी ख्याति प्राप्त की है।

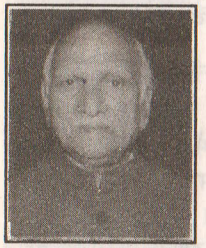

जयनारायण खण्डेलवाल—अध्यक्ष अ. भा. ख. वै. महासभा

डॉ. गुप्तजी साहित्य व कविता में अपना स्थान रखते हैं, साथ वे जो भी कार्य करते हैं समर्पित भाव से करते हैं। इधर-उधर के चक्करों में न पड़कर निरंतर सामाजिक व धार्मिक कार्यों में लगे रहते हैं। वास्तव में उनका अभिनन्दन करना समाज के लिये गौरव की बात है।

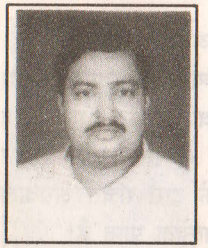

चन्दमोहन गुप्ता—सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता एवं पूर्व संपादक

सामाजिक कार्यकर्ताओं के प्रेरक, अद्‌भुत संगठनात्मक शक्ति के स्त्रोत, सरल एवं सात्विक जीवन के प्रेरणादायक श्री विष्णु जी अग्रवाल समाज से सम्बन्धित काव्य प्रणेता एवं अध्यात्म पुरुष हैं। आपने अग्रोहा तीर्थ और युवा अग्रवाल में संपादक के माध्यम से समाज बंधुओं को अग्रसेन अग्रोहा से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सत्यनारायण बंसल—प्रांत संघचालक, दिल्ली राज्य रा. स्व. से. सं.

श्री विष्णु जी से मेरा परिचय लगभग 45 वर्ष पुराना है। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन में मैं उनसे निकट संपर्क में आया। अग्रवाल सभा आदि अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के वे अनथक कार्यकर्ता रहे हैं। निष्काम भाव से समाज सेवा के आदर्श पर वे हमेशा चले हैं। निर्भीक, चरित्रवान एवं तेजस्वी सामाजिक कार्यकर्ता के नाते उनकी ख्याति है।

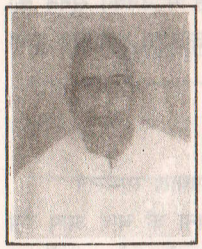

दुली चन्द गुप्ता—विभाग संघचालक झंडेवाला विभाग

श्री विष्णु गुप्ता जी ने साहित्य के क्षेत्र में सराहनीय सफलता प्राप्त की है। अनेक विषयों पर आपके विचार गहण चिंतन पर आधारित होते हैं। आपने अनेक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अग्रवाल समाज को जाग्रत करने तथा अपने प्राचीन स्थल अग्रोहा की जानकारी उपलब्ध कराने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

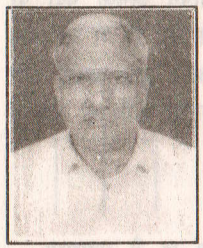

राजेन्द्र प्रसाद गुप्त—महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली

मेरे अग्रज भाई विष्णु चन्द्र गुप्त प्रारंभ से ही सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भाग लेते रहे हैं और मुझे भी समय-समय पर प्रेरित करते रहे हैं। अग्रवाल समाज, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गो-रक्षा अभियान एवं धार्मिक आयोजनों के संयोजन और संचालन में संलग्न रहते हैं। आपकी रचनाओं और लेखन में राष्ट्रीय चिन्तन रहता है। सम्मान के सुखद अवसर पर हार्दिक प्रसन्नता है।

सुरेश कुमार गुप्ता—मंत्री, सेवा भारती, रानीबाग

श्री विष्णु जी मिलनसार और व्यवहार कुशल हैं। मैंने इनके साथ कई सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लिया और इन्हें सक्रिय देखा। रानीबाग में आने पर सेवा भारती के कार्यक्रमों से जुड़कर अभावग्रस्त बंधुओं की सेवा में लग गये। अग्रवाल समाज के कार्यक्रमों के लिये प्रेरित करते हैं। नगर दर्शन, मंदिरों के दर्शन की व्यवस्था कराते रहे हैं। सम्मान के अवसर पर हार्दिक बधाई।

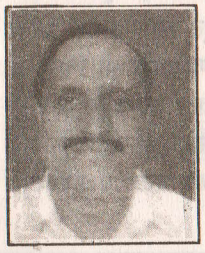

प्रदीप मित्तल—महामंत्री, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन

अग्रवाल समाज में श्री विष्णु जी का व्यक्तित्व सुपरिचित है। इनके द्वारा युवा कार्यकर्ताओं को समाज सेवा की प्रेरणा एवं दिशा मिलती रही है। अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल सम्बन्धी साहित्य का खोजपूर्ण प्रकाशन आपने किया है। आपके द्वारा रचित अग्रवाल झंडा गान को अखिल भारतीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है।

नंद किशोर गर्ग—विधायक, दिल्ली

भाई विष्णु जी को मैं पिछले 30 वर्षों से जानता हूँ। उनकी हिन्दी के प्रति असीम श्रद्धा एवं अग्रवाल समाज के संगठन में निष्ठा अनुकरणीय है। आप अग्र कवि, लेखक, पत्रकार के रूप में जाने जाते हैं। अग्रोहा तीर्थ मासिक व युवा अग्रवाल साप्ताहिक के संपादन में सराहणीय योगदान कर अग्रसेन अग्रोहा पर ज्ञातव्य एवं प्रेरक सामग्री प्रकाशित की है।

मंगत राम सिंघल—विधायक, दिल्ली

श्री विष्णु जी प्रसिद्ध लेखक, कवि एवं कर्मठ समाज सेवी हैं। मैंने इनको अग्रवाल समाज के मंचों पर प्रायः देखा और सुना है। आप एक कर्मठ समाज सेवी के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपका यह सम्मान समाज सेवा के लिये समर्पित व्यक्तित्व का सम्मान है।

आत्माराम गुप्ता—निगम पार्षद, दिल्ली

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त से मेरा संपर्क हिन्दी साहित्य सम्मेलन व अग्रवाल समाज के नाते हुआ। ये जो भी कार्य हाथ में लेते हैं उसे तन्मयता से पूरा करते हैं। आप समाज सेवा, वक्ता, लेखक और कवि के रूप में जाने जाते हैं। इस राष्ट्रीय सम्मान के अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई।

मांगे राम गर्ग—अध्यक्ष, भाजपा दिल्ली प्रदेश

श्री विष्णु जी को मैं वर्षों से जानता हूँ। मैंने इन्हें दिल्ली के अग्रवाल समाज के कार्यक्रमों में प्रायः देखा और सुना है। आप एक अच्छे कवि, लेखक और पत्रकार के रूप में सुपरिचित हैं। आप राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत हैं। अग्रवाल समाज के लिये समर्पित एवं निष्ठावान बंधु के सम्मान के समाचार से अत्यन्त आनंद हुआ। मेरी शुभकामनायें हैं।

श्याम लाल गर्ग—महामंत्री, भाजपा दिल्ली प्रदेश

मैंने डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त को त्रिनगर क्षेत्र में अग्रवाल समाज तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन में समर्पित होकर कार्य करते हुए देखा है। मेरी अध्यक्षता में महामंत्री के रूप में आपने जो कवि सम्मेलनों में प्रचार-प्रसार के कार्य किये हैं उनकी स्मृति भुलाई नहीं जा सकती। शुभकामनाओं सहित।

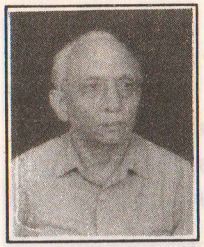

रतन लाल गर्ग—संरक्षक, दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त जी ने अपना सर्वस्व जीवन बालकपन से ही समाज सेवा में लगाया है और अपने लेख, कविता, भाषणों के द्वारा समाज के अन्दर जागृति लाने का प्रयत्न अथक प्रयत्न किया है। आपने न केवल दिल्ली प्रदेश अग्रवाल सम्मेलन के मंत्री के रूप में अपितु अ. भा. अ. स. के सभी आयोजनों में तन-मन से सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं।

अर्जुन कुमार—महामंत्री, राष्ट्रीय वैश्य परिषद्

श्री गुप्त जी ने अग्रवाल समाज एवं महाराजा अग्रसेन पर अपनी रचनाओं द्वारा जो काव्य गंगा बहायी, उससे अनेक कवि प्रेरित हुए हैं। आपने जिस काल में महाराजा अग्रसेन पर लिखना प्रारंभ किया था, उस समय हमारे कुल प्रवर्तक के बारे में अधिकांश लोग कुछ नहीं जानते थे।

बाबू राम गुप्ता—अध्यक्ष दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त को मैं गत 40 वर्षों से जानता हूँ। आप दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन के संस्थापक मंत्री हैं। आपने वर्षों तक इस पद पर कार्य कर दिल्ली की अनेक संस्थाओं को एक मंच पर लाने का महान कार्य किया है। इस शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

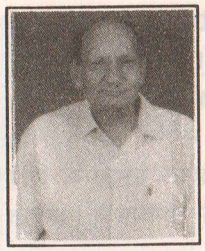

जय भगवान गुप्ता—प्रधान, वैश्य संगठन सभा सदर बाजार

सुपरिचित, कर्मठ एवं समर्पित कार्यकर्ता, कवि, वक्ता, लेखक एवं पत्रकार श्री विष्णु जी दिल्ली की सबसे बड़ी संस्था वैश्य संगठन सभा सदर बाजार के संस्थापक मंत्री हैं। 1962 में सभा की स्थापना के उपरांत कई वर्षों तक कुशल संचालन करते रहे हैं। 1998 जयंती के अवसर पर आपको अग्रभूषण की उपाधि से सम्मनित किया जा चुका है।

ओम प्रकाश अग्रवाल—संपादक, युवा अग्रवाल

भाई विष्णु जी पर लिखने के लिए एक ही बात है कि वह अग्रवाल समाज की धरोहर हैं। काव्य रचना के साथ-साथ समाज सेवा के लिए भी समय दे रहे हैं, ऐसा सहयोग बहुत कम देखने को मिलता है। इनको सम्मानित किये जाने का निर्णय न केवल उत्तम बल्कि कार्यकर्ताओं के लिये प्रेरक भी है।

शिव प्रकाश गुप्ता—पूर्व महामंत्री दिल्ली प्रादेशिक अ. सम्मेलन

दूरदर्शिता श्री गुप्त जी का विशेष गुण रहा है। जिस भी संस्था से वे सम्बद्ध रहे, वहां उन्होंने कपने कार्यकाल में कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ता तैयार करके उस संस्था को स्थायित्व प्रदान किया। उनके द्वारा संपादित सामग्री उनकी चयनशक्ति, कलात्मक रूचि साहित्यिक सामग्री संग्रहणीय रही है, ऐसा कहना अतिश्योक्ति नहीं है।

प्रेमचन्द गुप्ता—राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारत गो सेवक समाज

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त एक कुशल सामाजिक कार्यकर्ता, विचारक और लोकप्रिय कवि हैं। अग्रवाल समाज के उत्थान और कुरीतियों के निवारण हेतु प्रयत्नशील रहे हैं मैथिली शरण गुप्त की कविता के ये उद्‌गार "वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे" इन पर चरितार्थ करते हैं। समाजोपयागी कर्म करते हुए शतायु को संस्पर्श करें, यही कामना है।

जगदीश प्रसाद मोदी—अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय वैश्य अग्रवाल मंच

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त जी से मेरा परिचय कुछ वर्षों पूर्व ही हुआ है। लेकिन आपके विचार, लेख, समाज के प्रति खोजपूर्ण साहित्य आदि को देखकर प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। आप एक अच्छे कवि, पत्रकार, लेखक, समाज के लिये निष्ठावान कार्यकर्ता और हिन्दी के लिये समर्पित व्यक्तित्व हैं।

पवन सिंहल—संपादक, वैश्य पैनोरमा

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त ने अग्रोहा-अग्रसेन-अग्रवाल के विषय में अपने लेखन एवं पत्रकारिता तथा काव्य के द्वारा आजीवन भरपूर प्रचार-प्रसार किया है। उनके योगदान को सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ 2000 के रूप में मान्यता मिली है। यह सर्वथा उपयुक्त चयन है। आपका सम्मान लेखक, कवि व पत्रकारिता का सम्मान है। हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

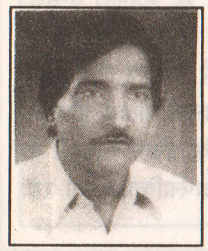

गिरिलाल गुप्ता—उद्योगपति एवं अन्तरंग मित्र

श्री विष्णु जी से मैं किशोरावस्था से सम्पर्क में हूँ। साथियों को साथ लेकर चलना, उनको सम्मान देना एवं निश्छल आत्मीय व्यवहार इनका विशेष गुण है। कथनी-करनी में समान हैं। कठिन परिस्थितियों में भी राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि समझकर कार्य करते रहे हैं। अग्रवाल संगठनों में आपका विशेष योगदान है। सम्मान एवं पुरस्कार 2000 के शुभ अवसर पर प्रसन्नता है।

घनश्याम दास गुप्ता—साहित्यकार, समाजसेवी, पत्रकार, लेखक भोपाल

सरल स्वभाव, निष्काम और स्वार्थरहित समाज सेवा भाव से काम करते रहना डॉ. विष्णु जी की विशेषता है। अपने लेखों व गीतों के कारण उन्होंने अग्र-साहित्य के भंडार को भरा है। अच्छे कवि और लेखक होने के कारण साहित्य जगत में उनका सम्मान है। अग्रवाल समाज को सुसंगठित करने में आपका विशेष योगदान रहा है। इस शुभ अवसर पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

जे. के. मित्तल—अध्यक्ष, राष्ट्रीय वैश्य परिषद् (दिल्ली प्रदेश)

डॉ. विष्णु जी विशेष रूप से अग्रवाल समाज में एक लग्नशील एवं उत्साही कार्यकर्ता के साथ-साथ अच्छे कवि एवं लेखक के रूप में जाने जाते हैं। आपका कविता संग्रह समाजोपयोगी व अग्रसेन-अग्रोहा की जानकारी से प्रेरित है। पत्रकार के रूप में आपका योगदान सराहनीय है। आपने "सादा जीवन उच्च विचार" नामक मुहावरे को अपने जीवन में पूर्णत: चरितार्थ किया है।

पूरण मल गोयल—प्रधान, अग्रवाल समाज त्रिनगर

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त अग्रवाल समाज के सुपरिचित कार्यकर्ता हैं। आप अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल के प्रचार में निरंतर लगे रहते हैं। अग्रवाल समाज त्रिनगर के संस्थापक सदस्य हैं तथा समाज के प्रथम उप-महामंत्री रहे हैं। अग्रोहा में दिये जा रहे पुरस्कार के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामना है।

युवराज सिंह गुप्ता—प्रधान, श्री हरलाल गर्ग परिवार संघ, पल्ला

भाई विष्णु जी लगनशील व्यक्ति हैं। जिस कार्य को हाथ में लेते हैं तत्परता से सफल करते हैं। आपने परिवार के संगठन के लिये बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया और सन् 1800 से 1998 तक की नौ पीढ़ी की वंशावली बहुत जानाकरी के साथ छापी है। आप एक सर्वप्रिय कुशल संगठन कर्ता हैं। आपके सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्ति पर हार्दिक बधाई।

अनिल कुमार मित्तल—संगठन मंत्री, दिल्ली प्रा. अग्रवाल सम्मेलन

डॉ. गुप्ता जी अप्रतिम साहित्यिक प्रतिभा के धनी हैं। उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। वह पर्याप्त लम्बे समय से सोद्देश्य लेखन द्वारा राष्ट्र और समाज की सेवा में रत हैं। हम उनके शतायु होने की कामना करते हैं और ईश्वर प्रार्थना करते हैं कि उनकी लेखनी का सरित प्रवाह भारत के कण-कण को सदा अप्लावित करता रहे।

रामफल गुप्ता—मंत्री, अग्रवाल धर्मशाला करोल बाग,

माननीय गुप्ता जी को मैं विगत 30 वर्षों से जानता हूँ। इनकी सामाजिक क्षेत्र में काफी रुचि है और इन्होंने अग्रवाल समाज की काफी सेवा की है तथा कई क्षेत्रों में अपनी सेवा द्वारा सम्मान भी प्राप्त किये हैं। आशा है समाज को इनका मार्ग दर्शन निरंतर प्राप्त होता रहेगा। राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु चुनने पर हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ।

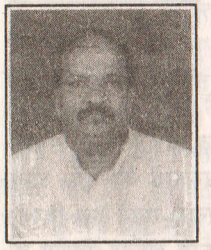

गणपत गोयल—प्रधान, वैश्य समाज मॉडल बस्ती

मैं श्री विष्णु जी को 1962 से जानता हूँ, इसी समय इन्होंने वैश्य संगठन सभा की स्थापना की थी। मैं इनकी निडरता व स्पष्टवादिता से बहुत प्रभावित हुआ। इनकी समाज सम्बन्धी लेखन प्रक्रिया बहुत ही मर्मज्ञ है। भगवान इनको लम्बी उम्र दे और ये समाज में अपने कार्यों से चेतना लाते रहें यही मेरी कामना है।

ब्रजभूषण गुप्ता—पूर्व मंत्री, अग्रवाल सभा विवेकानन्दपुरी

श्रीगुप्त जी अच्छे कवि एवं लेखक के साथ-साथ विशेष रूप से अग्रवाल समाज में लग्नशील एवं उत्साही कार्यकर्ता के रूप में भी जाने जाते हैं। आपके द्वारा अग्रवाल समाज सम्बन्धी "अग्र-काव्य" व समाजोपयोगी अन्य छोटी-छोटी अनेक पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। पत्रकार के रूप में भी आपका योगदान सराहनीय है। हम आपके स्वस्थ व दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

विमल विभाकर—ओजस्वी कवि एवं गीतकार

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त अग्रवाल समाज के कर्मठ, सामाजिक कार्यकर्ता, कवि एवं लेखक हैं। आपमें भिन्न-भिन्न अग्रवाल संस्थाओं में दायित्व का पद संभालकर महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस समय भी समाज के कार्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। मैं इनके सुखद भविष्य की कामना करता हूँ।

मदन विरक्त—प्रसिद्ध कवि एवं प्रबंधनिवेशक-महाराजा अग्रसेन समाचार न्यूज एजेन्सीज

वाणी में वरदान थे जिनके, करनी में कल्याण।
अग्रसेन महाराज को शत्-शत् करो प्रणाम।।

भाई विष्णुजी को अपने समाज में सेवाओं का जो मूल्यांकन किया गया है और सम्मान दिया गया है, उससे समाज का गौरव बढ़ा है। आपका जीवन महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धातों के प्रचार-प्रसार के लिये समर्पित रहा है।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट अग्रोहा

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार

परिचय एवं स्वरूप

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ

पुरस्कार की परम्परा चिरकाल से चली आ रही है। इसका उद्देश्य समाज में श्रेष्ठ उद्दात प्रवृतियों को पल्लवित तथा प्रोत्साहित करना है। यद्यपि नि:स्वार्थ, निस्पृह समाजसेवियों को अपने श्रेष्ठ कार्यों के बदले किसी प्रतिदान की अपेक्षा नहीं होती, फिर भी समाज का कर्त्तव्य है कि वह मानव-मात्र के लिये अपना जीवन समर्पित करने वालों के लिए कुछ ऐसा करे, जिससे समाज में सद्कार्यों के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा एवं प्रतिस्पर्द्धा पैदा हो तथा बुरा कार्य करने वाले हतोत्साहित हों। पुरस्कार समाज व्यवस्था को सुधारने का सकारात्मक पहलू है। इसके अलावा पुरस्कारों का एक अन्य उद्देश्य भी होता है। कुछ पुरस्कार व्यक्ति विशेष की स्मृति को बनाये रखने एवं विशेष उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भी प्रारम्भ किये जाते हैं। ये पुरस्कार किसी व्यक्ति-विशेष के नाम पर आधारित होते हैं और उनका विशिष्ट उद्देश्य होता है।

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा प्रवर्तित इसी प्रकार के पुरस्कार हैं, जिनका उद्देश्य श्री सर्राफ जी के जीवन से समाज के बंधुओं को श्रेष्ठ एवं समाज हित के कार्यों हेतु धन के विनियोजन की प्रेरणा देने के साथ-साथ पावन तीर्थ अग्रोहा के निर्माण, विकास को गति देना तथा जीवन के किसी भी क्षेत्र में समाज को गौरवान्वित करने वाले श्रेष्ठ कार्यकर्त्ताओं एवं उपलब्धि प्राप्त व्यक्तियों को सम्मानित करना है।

इन पुरस्कारों की परिकल्पना सिरसा के स्वनामधन्य सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ एवं उनके परिवार के लोगों के दान से संभव हुई है। कभी-कभी अच्छे कार्य संयोगवश हो जाते हैं। महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा के श्रीगंगानगर से शुभारंभ के अवसर पर अग्रोहा विकास ट्रस्ट के तत्कालीन अध्यक्ष श्री सुभाष गोयल (चेयरमैन जी. टीवी.), डॉ. चम्पा लाल गुप्त के आवास पर महाराजा अग्रसेन अध्ययन संस्थान के उद्घाटन करने के लिये पधारे हुए थे। श्री सर्राफ भी वहां उपस्थित थे। रथ यात्रा का समारोह कुछ ही क्षणों बाद प्रारम्भ होने वाला था। चलते-चलते डॉ. गुप्त ने श्री सर्राफ को इस ऐतिहासिक यात्रा के शुभारम्भ पर कुछ ऐसा करने की प्रेरणा दी, जिससे उनका नाम अमर हो जाये। बस बातों ही बातों में प्रति वर्ष एक लाख रुपये के पुरस्कार देने हेतु सेठजी ने अपनी ओर से 501011/- रु. देने के लिये सहमति प्रदान कर दी। इस घोषणा से समारोह के आयोजन कर्ताओं में विशेष उत्साह की लहर दौड़ पड़ी। इस घोषणा के लिये ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुभाष गोयल एवं गणमान्य व्यक्तियों द्वारा आपको सम्मानित किया गया और आपके उदार दान की सभी व्यक्तियों ने भूरि-भूरि सराहना करते हुए उसे समाज के अन्य व्यक्तियों के लिये अनुकरणीय बताया।

इस अवसर पर समाज की अनेक विभूतियां जैसे सर्वश्री सत्यप्रकाश आर्य, श्रीकिशन

मोदी, स्वरूपचन्द गोयल, रामेश्वर दास गुप्त, डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल, बद्रीप्रसाद अग्रवाल एवं प्रो. गणेशी लाल आदि उपस्थित थे। सबने इसके लिये सेठजी का साधुवाद किया। बाद में सेठ जी ने स्वप्रेरणा से इस राशि को एक लाख और बढ़ाकर 601011/- रु. कर दिया और इस प्रकार श्री रामप्रसाद पोद्दार राष्ट्रीय पुरस्कार की श्रृंखला में दो पुरस्कार और जुड़ गए।

पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं का चयन

इस हेतु गठित एक उच्च स्तरीय समिति द्वारा कठोर माप दंडों के आधार पर बड़ी ही निष्पक्षता से व्यक्तियों का चयन किया जाता है और इन पुरस्कारों से सम्मानित होने का गौरव अब तक सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री हरपतराय टांटिया-श्री गंगा नगर एवं श्री ब्रह्म प्रकाश गोयल-सोनीपत (वर्ष 1998) तथा स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल दिल्ली (पुरस्कार उनके पुत्र श्री चन्द्र मोहन ने ग्रहण किया) एवं शेखावाटी अग्रवाल सम्मेलन-नवलगढ़ (वर्ष 1999) को प्राप्त हो चुका है। इस वर्ष (2000) को यह राष्ट्रीय पुरस्कार अग्रवाल झंडा गान के रचयिता, सुप्रसिद्ध लेखक, कवि एवं समाज सेवी डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त-दिल्ली एवं सैन्य, वीरता व राष्ट्ररक्षा के क्षेत्र में अग्रवाल वैश्य समाज के योगदान को उद्घाटित कर अग्रवाल इतिहास में गौरवपूर्ण पृष्ठ जोड़ने वाले, 'वीरता की विरासत' शोधग्रंथ के लेखक कैप्टन कमल किशोर बंसल-दिल्ली को प्रदान किया जा रहा है।

पुरस्कार के अंतर्गत प्रत्येक को 51000/- रुपये, स्मृतिफलक, प्रशस्तिपत्र, शॉल, एवं श्रीफल आदि प्रदान किये जाते हैं।

मेजर रापमप्रसाद पोद्दार राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना

शूरवीरों, भक्तों और उद्योगपतियों की खान है राजस्थान। इसी राजस्थान के एक नगर राजगढ़ में 1914 में जन्में श्री रामप्रसाद पोद्दार ने अपने बुद्धि कौशल एवं व्यावसायिक सूझ-बूझ से आगे बढ़ते हुए स्वयं को व्यवसायाकाश में न केवल स्थापित किया वरन् एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। --एक आदर्श जीवन का। आपके द्वारा "नवीन कल्याण क्षेत्रीय सेना" के संगठन में उल्लेखनीय योगदान प्रदान करने पर महामहिम राष्ट्रपति द्वारा मानद "मेजर" की पदवी से अलंकृत किया गया। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कुशल प्रशासक, प्रबंधक एवं समाजसेवी होने के साथ-साथ आप चिंतक एवं लेखक भी थे। आपके व्यक्तित्व से आगे आनेवाली पीढ़ी को प्रेरणा मिलती रहे, इसके लिये अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने आपकी पावन स्मृति में प्रति वर्ष आपके नाम से राष्ट्रीय पुरस्कार ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को प्रदान करने का निश्चय किया, जिसका समाज सेवा, व्यवसाय, उद्योग, साहित्य और अग्रोहा के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान रहा हो। यह पुरस्कार 1995 से प्रारंभ किया गया और अबतक * डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल जबलपुर (1995-96) * श्री शीतल अग्रवाल मुम्बई (96-97) * श्री बालकृष्ण गोइन्का चैन्नई (97-98) * श्री राधेश्याम बंसल गांधीधाम कच्छ (98-99) और श्री बाबूलाल अग्रवाल छतरपुर (99-2000) महापुरुषों को दिया जा चुका है। **इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक लाख रु., स्मृति चिह्न, प्रशस्ति-पत्र, शॉल एवं श्रीफल आदि प्रदान किया जाता है।**

डॉ. चम्पालाल गुप्ता
संयोजक पुरस्कार समिति

अग्रोहा पहुँचने के लिए प्रमुख सड़कें व रेल मार्ग

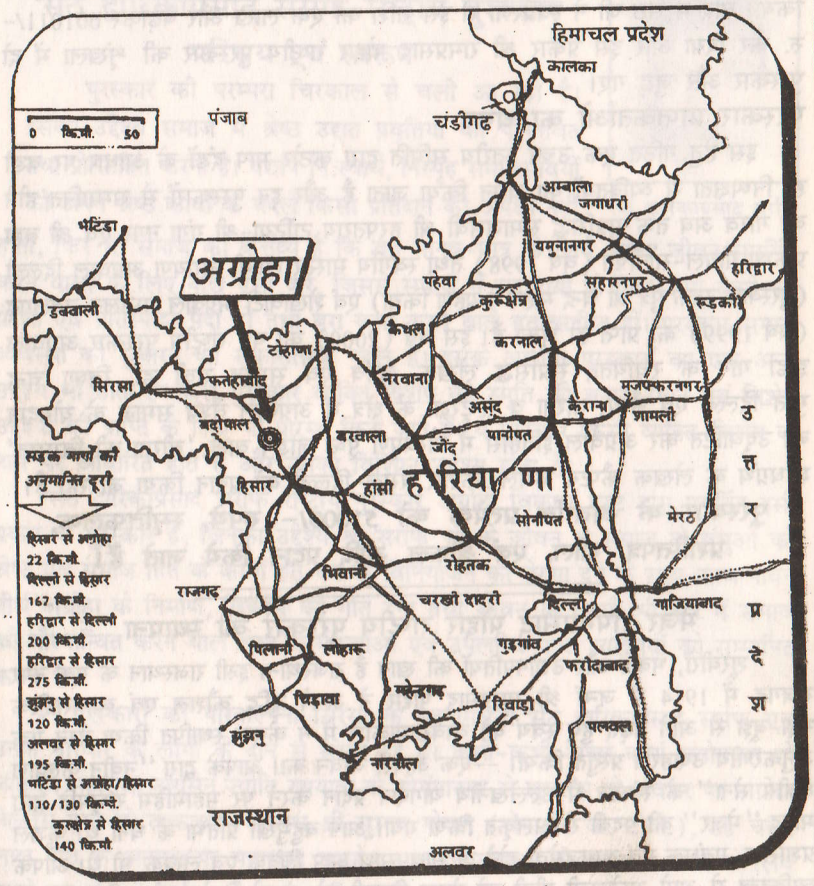

अग्रोहा महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 10 पर दिल्ली से लगभग 190 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। दिल्ली के अन्तर्राज्यीय बस अड्डे से हिसार-सिरसा-डबवाली आदि के लिए जो बसें चलती हैं उनसे वाया बहादुरगढ़, रोहतक, हांसी होते हुए हिसार पहुँचे। वहाँ से फतेहाबाद या भट्टू के लिए स्थानीय बसों में बैठकर अग्रोहा गाँव के बस स्टाप पर उतरना चाहिए। अग्रोहा सीधे रेल मार्ग से नहीं जुड़ा है, बसें चौबीसों घंटे आती-जाती हैं। रेल द्वारा निकटतम स्टेशन हिसार या सिरसा तक आकर वहाँ से बस द्वारा अग्रोहा धाम पहुँचा जा सकता है।

महाराजा अग्रसेन

अग्रवंश शिरोमणि, आग्रेय गणराज्य के संस्थापक महाराजा अग्रसेन जी का जन्म महालक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार प्रताप नगर के राजा धनपाल के वंश की छटी पीढ़ी में राजा बल्लभ (द्वितीय) के घर आज से 5187 वर्ष पूर्व हुआ। (विक्रम संवत् से 3129 वर्ष पूर्व, या कलियुग से 85 वर्ष पूर्व हुआ) (आजकल सन् 2000 में कलि काल संवत् 5102 चल रहा है।)

महाराजा अग्रसेन न्यायप्रिय, धर्मपरायण, प्रजापालक शासक थे। उनके राज्य में गरीबों और अमीरों के बीच कोई भेदभाव न था। सबको समान रूप से जीवन की सुख-सुविधाएं उपलब्ध थीं। उन्होंने वैश्य-समुदाय को संगठित करने के लिए अपने राज्य में 18 यज्ञ किये और 18 यज्ञों के आधार पर 18 गोत्रों का प्रचलन कर अग्रवाल समाज के रूप में एक ऐसे समाज का संगठन किया, जिसने व्यवसाय एवं उद्यम में अपनी प्रतिभा द्वारा भारत के आर्थिक एवं सर्वतोन्मुखी विकास को नई गति और दिशा दी। महाराजा अग्रसेन ने यज्ञों में पशुबलि का निषेध कर प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा, प्रेम, करुणा, सद्भाव-स्नेह का आदर्श रखा। उन्होंने यज्ञों एवं धार्मिक कृत्यों द्वारा प्रजा को सदाचार एवं नैतिकता की ओर अग्रसर कर मानव मात्र के कल्याण की साधना की। उनके राज्य में ऋद्धि-सिद्धियां हंसती और मंगल गाती थीं। वे वास्तव में एक महान विभूति थे। अग्रवाल समाज उन्हें अपना आदि पुरुष मानता हैं। वे वास्तव में अग्र-गौरव थे।

राज्य विस्तार : महाराजा अग्रसेन एक शक्तिशाली और वैभव सम्पन्न राजा थे। इनके गणराज्य की सीमाएँ उत्तर में हिमालय से नीचे यमुना तक पश्चिम में वर्तमान मारवाड़ सीमा को छूते हुए पूर्व में आगरा तथा दक्षिण में अग्रोहा तक थी।

इन्द्र पर विजय : इनके शौर्य से प्रभावित होकर नागलोक के राजा कुमुद ने अपनी पुत्री माधवी का विवाह अग्रसेन जी के साथ कर दिया। देवताओं के राजा इन्द्र भी माधवी से विवाह करना चाहते थे। अतः वह महाराजा अग्रसेन से ईर्ष्या करने लगे, परिणाम स्वरूप परस्पर युद्ध हुआ, दीर्घ काल तक राज्य में वर्षा न हुई अतः राज्य में अकाल पड़ गया। इन्द्र पर विजय पाने के लिये महाराजा अग्रसेन ने लक्ष्मी जी की पूजा कर आशीर्वाद प्राप्त किया और उनके आदेश पर अग्रसेन जी कोलपुर के नागराज महीधर की कन्याओं के स्वयंवर में पहुंचे और उनसे पाणिग्रहण करने में सफल हुए। इस विवाह से महाराजा अग्रसेन की शक्ति इतनी बढ़ गई कि इन्द्र को विवश होकर अग्रसेन जी से नारदमुनि को बीच में डालकर संधि करनी पड़ी।

महालक्ष्मी का वरदान : इन्द्र से संधि होने पर युद्ध कार्य से निवृत होकर महाराजा अग्रसेन जी ने यमुना तट पर पुनः महालक्ष्मी जी की पूजा आरंभ कर दी। इस पर महालक्ष्मी जी ने पुनः प्रकट होकर कहा कि हे राजन् ! तुम अपनी तपस्या समाप्त कर अब गृहस्थाश्रम का पालन करो। यही चारों आश्रमों का आधार है। महालक्ष्मी जी ने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे वंश के लोग सदा सुखी रहेंगे, तुम्हारा कुल तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध रहेगा, तुम्हारी प्रजा अग्रवंशी कहलायेगी, अग्रवंशियों में मेरी पूजा होती रहेगी जिससे वे सदा वैभवशाली रहेंगे। यह कहकर महालक्ष्मी जी अंतर्ध्यान हो गयी। इसके पश्चात् महाराजा अग्रसेन जी अपनी राजधानी प्रताप नगर पुनः लौट आये।

महाराजा अग्रसेन के नाम से कुछ महत्वपूर्ण नामकरण

महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 10

महाराजा अग्रसेन के ऐतिहासिक महत्व एवं अग्रवाल समाज की भावनाओं को देखते हुए भारत सरकार ने दिल्ली से फाजिल्का तक के राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 10 का नामकरण महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग कर दिया है। यह राजमार्ग रोहतक, हांसी, हिसार, अग्रोहा होते हुए भारत-पाक सीमा फाजिल्का तक जाता है। इससे महाराजा अग्रसेन को राष्ट्रीय स्तर पर विशेष महत्त्व मिला है।

महाराजा अग्रसेन जलपोत

अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल के बढ़ते हुए महत्त्व को देखते हुए भारत सरकार के परिवहन मंत्रालय ने 350 करोड़ की लागत से 140000 टन क्षमता वाले जहाज का नामकरण महाराजा अग्रसेन जलपोत रखा है, जो अग्रोहा विकास ट्रस्ट एवं अन्य संगठनों की एक महत्वपूर्ण सफलता है। इस विशाल जहाज का जलावतरण अप्रैल 1995 में एक अत्यंत भव्य समारोह में मुंबई में किया गया।

सुपर नेशनल हाईवे नं. 1

महाराजा अग्रसेन के समानता, प्रेम, अहिंसा, सहिष्णुता, एक रुपैया, एक ईंट जैसे आदर्शों का ज्यों-ज्यों प्रसार बढ़ता जा रहा है, त्यों-त्यों उनका महत्व भी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जगत में बढ़ता जा रहा है। भारत सरकार के भूपरिवहन मंत्रालय ने भारत में सुपर नेशनल हाइवे के निर्माण की घोषणा की है, जिसमें मार्ग नं. 1, जो दिल्ली से लेकर कन्याकुमारी तक है का नामकरण महाराजा अग्रसेन पर किया गया है, यह सम्पूर्ण अग्र/वैश्य समाज के लिए गौरव का विषय है।

महाराजा अग्रसेन आश्रम एवं अग्रसेन घाट हरिद्वार

स्व. मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल ने अपने कुछ साथियों के सहयोग से सादा जीवन उच्च विचार, जन सेवा, दया और त्याग की भावनाओं के आधार पर 13 अप्रैल 1975 को महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट का पंजीकरण कराकर कुछ महापुरुषों के सहयोग से 1 जून 1976 को सप्त-सरोवर मार्ग हरिद्वार में 3000 वर्ग गज भूमि गंगाजी के किनारे खरीदी। 9 अप्रैल 1978 को आश्रम का शिलान्यास व भूमि पूजन सम्पन्न हुआ। 9 अप्रैल 1986 को कर्मठ, सामाजिक, धार्मिक व शिक्षाविद् ला. शिवदत्त गुप्ता (कमला नगर, दिल्ली) द्वारा आश्रम का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। यह आश्रम भव्यतम, सुन्दरता व स्वच्छता की छाप वहां आनेवाले हर यात्री पर छोड़ता है। अग्रसेन आश्रम के ठीक सामने 110 फुट ऊँचे, 180 फुट लम्बें एवं 7 बड़े प्लेट फार्मों से निर्मित सुन्दर अग्रसेन घाट का उद्घाटन 30 मई 1993 को उद्योगपति श्री विजय कुमार तायल दिल्ली द्वारा स्वागताध्यक्ष लाला राधाकृष्ण गुप्ता जी के सान्निध्य में हुआ। यहां प्रतिदिन गंगा मैय्या की दिव्य आरती व पूजा होती है। कहते हैं– प्राचीन काल में महाराजा अग्रसेन जी की तपोस्थली यहीं थी।

अग्रोहा विकास की आवश्यकता

सन् 1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन ने सर्व सम्मति से नई दिल्ली तथा नागपुर सम्मेलन में महामंत्री श्री रामेश्वर दास गुप्ता के नेतृत्व में अग्रोहा को तीर्थ रूप में विकसित करने की योजना को स्वीकृति प्रदान कर निर्माण कार्य आरंभ करने का निश्चय किया था।

संसार में कौन ऐसा व्यक्ति होगा जिसे अपना देश, अपनी जन्मभूमि और जन्मदात्री प्रिय न हो। अग्रवाल समाज के घटक बड़ी उत्सुकता से उस दिन की बाट निहार रहे हैं जब अग्रोहा का पुनर्निमाण होकर अग्रवाल समाज की कीर्ति ध्वजा फहराएगी।

1. अग्रोहा अग्रकुल के प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन की राजधानी है।
2. अग्रोहा अग्रवालों की पवित्र एवं पावन निकास भूमि है।
3. अग्रोहा समस्त अग्रवालों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।
4. अग्रोहा समस्त अग्रवाल समाज के संगठन का केन्द्र बिन्दु है।
5. अग्रोहा एकता, समता के आधार पर समस्त समाज को एकत्रित करने में समर्थ होगा।
6. अग्रोहा में आयोजित अग्रसेन जयन्ती, शक्ति मेले, सामूहिक विवाह कार्यक्रम, समाज में जागृति, निकटता तथा प्रेम का संचार करेंगे।

अतः अग्रोहा का विकास अग्रोहा तीर्थ के अनुरूप करना आज के समय के आवश्यकता है।

अग्रवाल ध्वज

केसरिया रंग का : अंग्रेजी अक्षर V के समान कटाव 9 इंच, लम्बाई 27 ईंच, चौड़ाई 18 ईंच यानि 1:2:3 का अनुपात कटाव, चौड़ाई में है। बीच में सिल्वर रंग का सूर्य (18 किरणें जो गोत्रों की सूचक हैं।) एक रुपया और ईंट (महाराजा अग्रसेन के समाजवाद के प्रतीक हैं।) एक रुपयें में एक का अक्षर देवनागरी में होगा।

आइये ! हम संकल्प लें

* कि वर्ष में एक बार अग्रोहा की सपरिवार यात्रा करेंगे।
* कि अपने बच्चों का मुण्डन कराने तथा जात देने अग्रोहा जायेंगे।
* कि हम अपने परिवार के बच्चों के नामकरण, विवाह, गृह-प्रवेश आदि संस्कारों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों के मुहूर्त तथा परिवार में होनेवाले प्रत्येक शुभ एवं मंगलमय कार्य के अवसर पर अग्रोहा को याद रखेंगे।
* कि हम अपने प्रतिष्ठानों से अपनी आय का एक प्रतिशत अथवा यथाशक्ति कुछ न कुछ राशि अग्रोहा के लिये निकालेंगे।
* कि हम अपने घरों एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में अग्रसेन जी का चित्र बनायेंगे।
* कि हम परिवार में अग्र साहित्य एवं अग्र पत्र-पत्रिकायें पढ़ने के लिये मंगायेंगे।

अग्रवाल वैश्य समाज की महान विभूतियाँ

जिनके सम्मान में भारत सरकार द्वारा समय-समय पर डाक टिकट जारी किये गये।

* **महात्मा गाँधी** : जन्म 2-10-1869, अवसान 30-1-1948 आप पर सर्वप्रथम डाक टिकट 15 अगस्त 1948 को डेढ़ आना, 3½ आना, 10 रुपये का जारी किया गया और समय-समय पर अब तक भी निरन्तर छप रहे हैं।

* **लाला लाजपत राय** : जन्म 2-10-1865 अवसान 16-11-1928 आप पर पन्द्रह पैसे का डाक टिकट सर्वप्रथम 28 जनवरी 1965 को जारी किया गया।

* **डॉ. भगवान दास** : जन्म 12-1-1869, अवसान 18-9-1958 आप पर 20 पैसे का डाक टिकट सर्वप्रथम 20 जनवरी 1969 को जारी किया गया। (30,00,000)

* **सेठ जमनालाल बजाज:** जन्म 4-11-1889, अवसान 11-2-1942 आप पर 20 पैसे का डाक टिकट सर्वप्रथम 4 नवम्बर 1970 को जारी किया गया। (30,00,000)

* **राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त** : जन्म 3-8-1886, अवसान 5-1-1964 आप पर 25 पैसे का डाक टिकट सर्वप्रथम 3 जुलाई 1974 को जारी किया गया।

* **भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र** : जन्म 9-9-1850, अवसान 5-1-1885 आप पर 25 पैसे का डाक टिकट सर्वप्रथम 9 सितम्बर 1976 को जारी किया गया। (30,00,000)

* **अग्रकुल प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन** : जन्म आश्विन शुक्ल एकम् (प्रथम नवरात्र) आप पर 25 पैसे का डाक टिकट सर्वप्रथम 24 सितम्बर 1976 को जारी किया गया। भारत सरकार द्वारा अब तक जारी किये गये डाक टिकटों की संख्या में महाराजा अग्रसेन जी के डाक टिकट जारी करने की संख्या सबसे ज्यादा थी। (80,00,000)

* **सर गंगाराम** : जन्म 13-4-1851, अवसान 10-7-1927 आप पर 25 पैसे का डाक टिकट सर्वप्रथम 4 सितम्बर 1977 को जारी किया गया।

* **राम मनोहर लोहिया** : जन्म 23-3-1910, अवसान 12-10-1967 आप पर 25 पैसे का डाक टिकट सर्वप्रथम 12 अक्टूबर 1977 को जारी किया गया। 23-3-1997 को आप पर पुनः एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया। (4,000,00)

* **शिव प्रसाद गुप्ता** : जन्म 28-6-1883, अवसान 24-4-1944 आप पर 60 पैसे का डाक टिकट सर्वप्रथम 28 जून 1988 को जारी किया गया। (10,00,000)

* **श्री प्रकाश** : जन्म 3-8-1890, अवसान 23-6-1971 आप पर एक रुपये का डाक टिकट सर्वप्रथम 3 अगस्त 1991 को जारी किया गया।

* **हनुमान प्रसाद पोद्दार** : जन्म 17-9-1892, अवसान 22-3-1971 आप पर एक रुपये का डाक टिकट सर्वप्रथम 19 सितम्बर 1992 को जारी किया गया। (60,00,00)

* **श्याम लाल गुप्त** : जन्म 16-9-1893, अवसान 10-8-1977 आप पर एक रुपये का डाक टिकट सर्वप्रथम 4 मार्च 1997 को जारी किया गया। (4,000,00)

आइये हम भी ऐसे महापुरुषों से प्रेरणा लेकर समस्त देश व समाज के उत्थान तथा प्रगति के पथ पर सदैव तत्पर रहें।

महाराजा अग्रसेन की अग्रवाल समाज को देन

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

- ☞ महाराजा अग्रसेन ने महालक्ष्मी को आराध्य देवी के रूप में प्रतिष्ठित करके एक सुसमृद्ध समाज का निर्माण किया ।
- ☞ जनपद प्रणाली पर नवीन गणराज्य अग्रोहा की स्थापना की।
- ☞ रक्त शुद्धि के आधार पर गोत्रों का प्रचलन किया ।
- ☞ अग्रोहा में बसने वाले प्रत्येक परिवार को एक रुपया और एक ईंट दिलाकर समता के सिद्धांत पर भाई-चारे की भावना को विकसित किया।
- ☞ वैश्यों को शस्त्र विद्या में निपुण किया ताकि वे वैश्य धर्म, कृषि, गोपालन, व्यवसाय करते हुए भी अपनी रक्षा स्वयं कर सकें ।
- ☞ अहिंसा, निराभिष भोजन, धार्मिक जीवन, प्रामाणिकता, त्याग और बलिदान से ओत-प्रोत, मितव्ययी, संयमी एवं दानी समाज का निर्माण किया ।
- ☞ महाराजा अग्रसेन ने पिता तुल्य, प्रजापालक राजा का आदर्श प्रस्तुत कर राज्य के कल्याणकारी पक्ष को सबल बनाया और एक जनहितकारी राज्य की धारणा को व्यावहारिक रूप दिया ।
- ☞ अपने 18 पुत्रों का विवाह सामूहिक रूप से नागवंश की 18 कन्याओं के साथ करके वैवाहिक पद्धति को भी एक आदर्श रूप प्रदान किया ।
- ☞ अपनी सम्पत्ति को चार भागों में बाँटकर पहला भाग गोपालन, दान आदि में, दूसरा भाग व्यापार में, तीसरा भाग गृहस्थी के खर्च में और चौथा भाग संचित करके रखें ।
- ☞ गो को माता समझते हुए गोसंवर्धन तथा रक्षण करें।
- ☞ अपने देश, जाति और समाज के लिए सर्वस्व समर्पण करें।

❑❑

अग्रवाल कौन

अ- अच्छाई की ओर अग्रसर होता जाए
ग्र- ग्रहण करे आदर्श धर्म का पथ अपनाए
वा- वाणी के अनुरूप आचरण जो करता हो
ल- लक्ष्य निष्ठ जो अविचल अग्रवाल कहलाए

ऐसा क्यों कहलाते हैं?

– डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

अग्रवाल : सदा आगे कार्य करने के कारण, अग्रोहे का होने के कारण
बनिया : बनज (व्यापार) करने के कारण।
सेठ (श्रेष्ठ) : अपने अच्छे आचरणों के कारण, समाज में सर्वोच्च स्थान के कारण।
महाजन : जनों में महान कार्य करने के कारण।
वैश्य : प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश के कारण।
गुप्त : व्यापारिक गूढ़ता के कारण।
शाहजी : साहूकार होने के कारण।

अग्रवाल जाति के श्रेष्ठता सूचक कहावतें

- ***आगे शाह, पीछे बादशाह***
  राजा से भी अग्रिम स्थान महाजन का है।
- ***बावन बुद्धि बाणिया***
  वणिक सब प्रकार की बुद्धियों से सम्पन्न होता है।
- ***अगम बुद्धि बाणिया***
  बाणिया सबसे पहले सोचता है और उसकी बुद्धि का कोई मुकाबला नहीं।

अग्रवालों के मान्य 18 गोत्र

गर्ग	मंगल	बिन्दल	गोयल	जिंदल	मित्तल
गोयन	तिंगल	तायल	बंसल	ऐरन	भन्दल
कंसल	धारण	नागल	सिंहल	मधुकल	कुच्छल

चित्रों में .....

बायें से सर्वश्री सत्य नारायण बंसल (प्रान्त संघ चालक), डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त, राम कुमार गुप्ता (बहादूरगढ़ वाले) एवं रामेश्वर दास गुप्ता

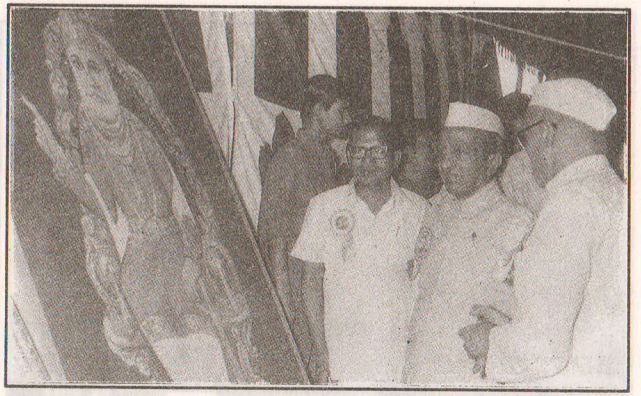

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन कराते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति श्री बी. डी. जत्ति के साथ डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त प्रदर्शनी संयोजक एवं स्व. श्री बाबू लाल गुप्ता (सलमे चाले)।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के बम्बई अधिवेशन
पर तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा
द्वारा साहित्यिक सेवार्थ सम्मान

अग्रोहा तीर्थ (हिन्दी मासिक) द्वारा डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त पर
संग्रहित विशेषांक प्रकाशित करने पर श्री जयनारायण खण्डेलवाल
(अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन) द्वारा सम्मानित

वैश्य संगठन सभा सदर बाजार दिल्ली की अग्रसेन जयंती
के अवसर पर डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त को सम्मानित करते हुए
श्री बनारसी दास गुप्ता (सांसद) साथ में
सभा अध्यक्ष श्री ग्यारसी राम गुप्ता

श्री हरलाल गर्ग परिवार संघ के द्वारा सपत्नीक अभिनंदन
बायें से सर्वश्री युवराज गुप्ता (प्रधान), रामेश्वर दास गुप्त,
डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त एवं श्रीमती रामेश्वरी देवी

दिल्ली के अग्रवाल परिवार (खण्ड तीन) के विमोचन समारोह
में सम्मानित होते हुए डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

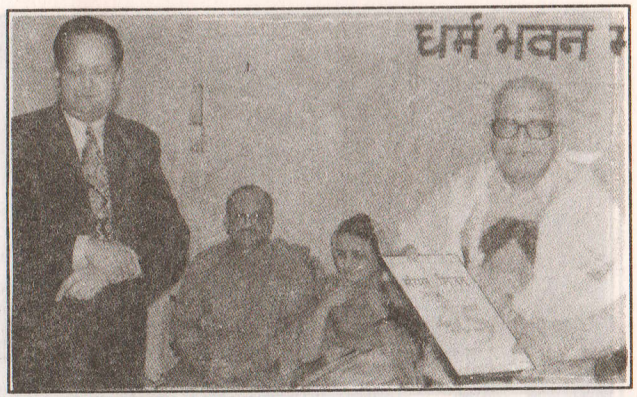

धर्म भवन नई दिल्ली में आयोजित समारोह में ''मंगल-मिलन''
पत्रिका में साहित्यिक सेवार्थ सम्मानित
डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त साथ में बैठे हुए
श्रीमती स्वराजमणि अग्रवाल एवं डॉ. वेद प्रताप वैदिक

डा. विष्णु चन्द्र गुप्त काव्य पाठ करते हुए। बायें से सर्वश्री विमल विभाकर
(अग्र कवि), चित्रसेन गुप्ता, हुकम चन्द बंसल, राजकुमार,
जय भगवान जिंदल, सतपाल गुप्ता, ग्यारसीराम गुप्ता, नौरंग राय तायल,
दीपचन्द गोयल एवं बनारसी दास सिंहला

अग्रवाल सभा विवेकानन्दपुरी के प्रधान श्री भरत सिंह गुप्ता श्री विष्णु जी को
प्रतीक चिह्न भेंट करते हुए। साथ में खड़े हैं श्री
पीछे बैठी हुई सांसद अनिता आर्य

चित्रों में परिवार.....

बायें से बैठे हुए माताश्री गंगा देवी, पिताश्री हुकम चन्द गुप्ता,
डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त, अनुज राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, जीजाश्री विनोद कुमार गुप्ता
पीछे खड़े हुए यादराम गुप्ता, अनुज प्रेम नारायण गुप्ता एवं चन्द्र गुप्त

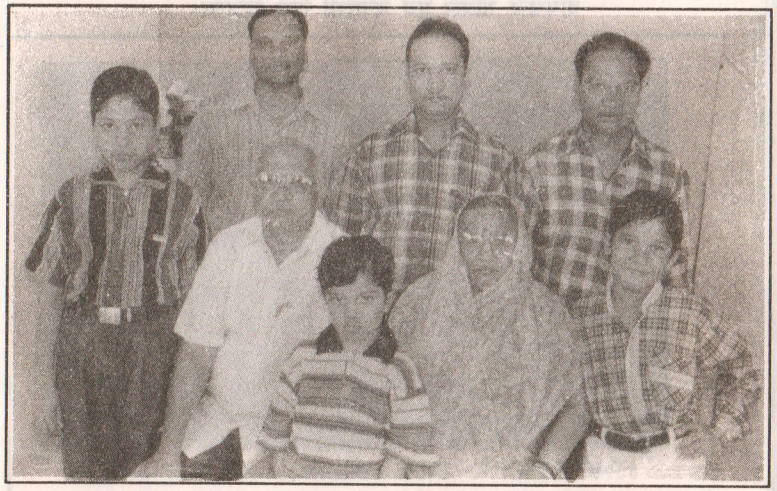

बायें से साथ खड़े पौत्र विकास, बैठे हुए डॉ विष्णु चन्द्र गुप्त, पौत्र ध्रुव,
श्रीमती रामेश्वरी गुप्ता एवं पौत्र लोकेश
पीछे खड़े सुपुत्र नरेन्द्र कुमार गुप्त, दिनेश चन्द्र गुप्त व महेश चन्द्र गुप्त

हरलाल गर्ग परिवार संघ, ग्राम पल्ला की

भाई विष्णु चन्द्र गुप्त के

सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार
एवं सम्मान के अवसर पर हार्दिक शुभ कामनाएँ

परिवार अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है।

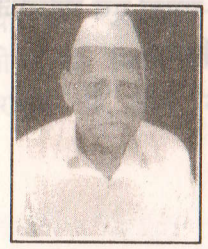

पिताश्री हुक्मचन्द गुप्ता

युवराज सिंह गुप्ता

रघुवीर सिंह अग्रवाल

ऋषि प्रकाश गुप्ता

महावीर प्रसाद गर्ग

जय भगवान गुप्ता

डॉ. कुलभूषण गुप्ता

राम मेहर गुप्ता

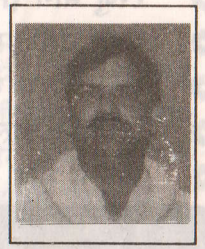

नरेश कुमार गुप्ता

अग्रोहा के दर्शनीय स्थल

- महाराजा अग्रसेन मन्दिर
- कुलदेवी महालक्ष्मी मन्दिर
- वीणावादिनी सरस्वती का मन्दिर
- शक्ति सरोवर
- शेषशायनी भगवान् विष्णु, गजेन्द्र-मोक्ष, गंगा-यमुना एवं महाराजा अग्रसेन को वरदान व गीता-उपदेश की झाकियां
- सत्संग-भवन
- वानप्रस्थ-आश्रम
- यात्री गृह
- बृजवासी अतिथि सदन
- महाराजा अग्रसेन धर्मशाला एवं अतिथिशाला
- हनुमान-मन्दिर एवं ९० फुट ऊँची भगवान मारूति की प्रतिमा
- बाल क्रीड़ा केन्द्र (अप्पू-घर)
- नौका विहार
- महाराजा अग्रसेन शोध-केन्द्र
- शीला माता-मन्दिर
- महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज, अस्पताल एवं शोध-संस्थान
- महाराजा अग्रसेन जी का प्राचीन मन्दिर
- श्री अग्रसेन वैष्णव गौशाला एवं
- प्राचीन थेह (टीले)
- रज्जु मार्ग (Rope way)
- वैष्णु देवी मन्दिर
- बाबा भैरव मन्दिर
- तिरुपति बालाजी मन्दिर
- डायना सौर

अग्रोहा हमारा तीर्थस्थल है
वर्ष में एक बार अग्रोहाधाम की यात्रा अवश्य करें।

श्री अग्रसेन स्तुति

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

जय हो ! जय हो ! जय हो ! अग्रसेन महाराज आपकी जय हो !
अग्रवंश की जीवन धारा, प्रेमपूर्ण व्यवहार हमारा।
अग्रजनों के सदय हृदय में, सत्य, अहिंसा, क्षमा भरी हो।।1।।

सद्भावों की कीर्ति जगाकर,
न्यायपूर्ण व्यवसाय चलाकर।
जीवन के निज स्वार्थ छोड़कर,
परमार्थ में लीन सदा हो ।।2।।

सश्रम अर्जित शुद्ध कमाई,
निष्कपट, सत्य व्यवहार भलाई।
सादा जीवन उच्च विचार का,
निज जीवन में अभ्युदय हो ।।3।।

दुर्गुण दुर्व्यसनों को त्यागें,
दीन-बन्धु का कष्ट मिटा दें।
पीड़ित व असहाय जनों की,
सेवा में तन, मन धन लय हो ।।4।।

गोपालन, दानादि पहला,
दो व्यापार गृहस्थ व्यय तीजा।
चार भाग में सम्पत्ति बाटें,
चौथा भाग सदा संचित हो ।।5।।

अपनी संस्कृति और सभ्यता,
गो-पूजा गायत्री गीता।
गंगा-यमुना कृष्ण मुरारी,
जीवन का प्रेरक संबल हो ।।6।।

प्याऊ, मन्दिर या गोशाला,
जनहित में निर्मित धर्मशाला।
एक ईंट और एक रुपये का,
प्रेरक वह सहयोग प्रबल हो ।।7।।

जय हो ! जय हो ! जय हो ! अग्रसेन महाराज आपकी जय हो ।।

❑❑

अग्रोहा निर्माण में

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

निकल पड़ो मैदान में अग्रोहा निर्माण में,
दाग न लगने पाए कोई अग्रवंश की शान में।

अग्रसेन के हम हैं बेटे, जाने न देंगे ईमान,
अग्रोहा की खातिर तन, मन, धन, कर देंगे बलिदान।
नई चेतना भरनी है, अब अग्रवंश संतान में,
दाग न लगने पाये कोई, अग्रवंश की शान में ।।1।।

एक रुपये और एक ईंट का जो आदर्श पुराना है,
समता का आदर्श पाठ वह नित-नित ही दुहराना है।
प्रति व्यक्ति अब वही दान दे, अग्रोहा निर्माण में,
दाग न लगने पाए कोई, अग्रवंश की शान में ।।2।।

अग्रोहा में अग्रसेन के, मन्दिर का करके निर्माण,
महालक्ष्मी व सतियों को देना है पूरा सम्मान।
तीर्थराज बने अग्रोहा, अग्रवंश कल्याण में,
दाग न लगने पाए कोई, अग्रवंश की शान में ।।3।।

ऋषि-मुनि व महाजनों की रीति सदा निभानी है,
गौ-पूजा व यज्ञ अहिंसा, जीवन में अपनानी है।
पर हितकारी, जन हितकारी, अग्रवंश की शान में,
दाग न लगने पाए कोई, अग्रवंश की शान में ।।4।।

अग्रोहा की शान प्रत्येक देशवासी की शान है।
अग्रोहा का गौरव पूरे देश का गौरव है।।
आइये ! अग्रोहा को महान बनायें

आह्वान

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

अग्रसेन की हम संतान, करते हैं नित गौरव गान।
उनके आदर्शों को मान, जीवन में हम बनें महान।।
मिल-जुलकर हम प्रेम बढ़ावें, द्वेष-भाव को दूर भगावें।
समता निज जीवन में लावें, अहं भाव है झूठी शान।।
सादा जीवन उच्च विचार, यह हो जीवन का आधार।
मन से कर आदर सत्कार, यथा-शक्ति हम देवें दान।।
दहेज दिखावा या प्रदर्शन, करते हैं जाति का मर्दन।
झुकती आज इसी से गर्दन, इससे जल्दी पावें त्राण।।
करनी व कथनी का अन्तर, आदर्शों को कर छूमन्तर।
धधक रहा अन्दर से अन्तर, उसकी ध्वनि को लें पहिचान।।
संयम निज जीवन में लावें, अनपढ़ता का पाप मिटावें।
वृक्षारोपण को अपनावें, सुनें राष्ट्र का यह आह्वान।।

महाराजा अग्रसेन

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

अग्रसेन आदर्श हमारे, हमको प्राणों से प्यारे।
नृप बल्लभ के राजदुलारे, अग्रवंश के ध्रुव तारे।।
शौर्य पराक्रम की प्रतिमा थे, सत्य-अहिंसा के पालक।
साम्य योग के शिल्पकार थे, अग्रवंश के शुभ चालक।
समता के आधार बिन्दु थे, अग्रवंश के ध्रुव तारे ।।1।।
सिद्धान्तों के मौन व्रती थे, रिद्धि-सिद्धियों के दाता।
अग्रवंश की दिव्य दृष्टि थे, शुभ संकल्पों के दाता।
भीष्म पितामह आदर्शों के, अग्रवंश के ध्रुव तारे ।।2।।
अग्रोहा के शासक थे वे, अग्रवंश के संस्थापक।
न्याय-नीति की गरिमा थे वे, गोत्र प्रथा उनकी व्यापक।
चिन्तन के अभिनव स्वरूप थे, अग्रवंश के ध्रुव तारे ।।3।।
अग्रसेन आदर्श हमारे हमको प्राणों से प्यारे।।

अग्रोहा की कहानी-उसी की जबानी

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

मैं हूं थेह अग्रोहा की, नहीं कोई मेरा सानी,
मेरे रज-कण में अंकित है गौरवमयी कहानी।

मेरे तन में छिपे हुए हैं, अद्भुत महल अटरियाँ।
बीच नगर में शोभा पावें महालक्ष्मी मैया।।
लम्बे चौड़े राजमार्ग चौपड़ की सड़कों वाली।
अग्रसेन जी की अग्रोहा नगरी , रही निराली।।
नागराज महिधर की कन्या यहीं रही पटरानी।
मेरे रज-कण में अंकित है गौरवमयी कहानी।।

पापों की गठरी को मानव जब ढ़ोता रहता था।
सुख वैभव के सपनों में जब नित घुलता रहता था।
पशु बलि को त्याग यज्ञ में अहिंसा व्रत अपनाया।।
सहानुभूति व प्रेम त्याग का सुन्दर पाठ पढ़ाया।
अब भी मेरे रज कण में गूंज रही वह वाणी।
मेरे रज-कण में अंकित है गौरवमयी कहानी।।

गऊ ब्राह्मण की रक्षा करना परम धर्म बतलाया।
सदा निरामिष भोजन करना वैश्य धर्म कहलाया।
पर हितकारी जन हितकारी ऐसी रीति चलाई।
दीन दुःखी को गले लगाया समझा सबको भाई।।
अग्रजनों के आदर्शों की शोभा जग ने जानी।
मेरे रज-कण में अंकित है गौरवमयी कहानी।।

एक लाख परिवार यहाँ पर मिलजुल कर रहते थे।
अट्ठारह गण प्रतिनिधि मिलकर यहाँ शासन करते थे।
अग्रसेन ने अग्रोहा में ऐसी रीति चलाई।
एकता व बन्धुत्व भाव की सच्ची ज्योति जगाई।।
एक रुपये और एक ईंट की समता थी लासानी।
मेरे रज-कण में अंकित है गौरवमयी कहानी।। ❑❑

अग्रसेन के वंशज, हम अग्रोहा तीर्थ बनावें

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

भारत के कोने-कोने से, अग्रबन्धु मिल आवें।
अग्रसेन की गौरव गाथा घर-घर में फैलावें।।
एक रुपया और एक ईंट, आदर्श भाव अपनावे।
तन-मन धन अर्पित कर, समता की ज्योति जगावें।।
सूत्र एक में बंधकर के, हम प्रबल शक्ति बन जावें। अग्रसेन की...

देश भक्ति के लिए सदा ही तन, मन, धन है वारा।
मोहन दास कर्मचन्द गान्धी, लाजपत राय हमारा।।
भारतेन्दु व गुप्त, कवि रत्नाकर सब का प्यारा।
न्याय क्षेत्र में शादी लाल का '' का खूब सितारा।।
भामाशाह की दानवीरता अग्रवंश अपनावे। अग्रसेन की...

अग्रवंश के गौत्र अट्ठारह का क्या कोई सानी।
रक्त शुद्धता की खातिर आवश्यक माने ज्ञानी।।
एक गोत्र में भाई बहिन है अन्य गोत्र असनाई।
विवाह-सूत्र बन्धन की कैसी अनुपम रीति बनाई।।
गोत्र व्यवस्था अग्रवंश के सभी बन्धु अपनावें। अग्रसेन की ...

छल-कपट द्वेष माँस मदिरा से जो रहते हैं दूर।
सादा जीवन उच्च विचार का पालन करें जरूर।।
दहेज दिखावा और प्रदर्शन को जो माने क्रूर।
अग्रसेन के बालक हैं वे अग्रवंश के नूर।
सद्गुण सद्बुद्धि अपनाकर जीवन सफल बनावें। अग्रसेन की...

भारत की संस्कृति सभ्यता के, हम हैं रखवारे।
गौ पूजा, गायत्री, गीता हैं आदर्श हमारे।।
निर्धन व असहाय जनों की, पीड़ा को पहिचानें।
प्याऊ, मन्दिर व गौशाला जन हित में हम जानें।।
विद्यालय निर्माण कराकर, ज्ञान की ज्योति जगावें। अग्रसेन की ... ❑❑

गूंजेगा अब गौरव गान

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

अग्रोहा से अग्रसेन का, गूंजेगा अब गौरव गान।
महालक्ष्मी व सरस्वती का, मिले यहां पावन वरदान।।

नफरत का अस्तित्व नहीं था, छलका करता सबमें प्यार।
सभी जनों का इस धरती पर, पूरा-पूरा था अधिकार।।
प्रेम, दया, ममता, समता की, बहती थी यहां पर रसधार।
आगन्तुक का स्नेह-भाव से, होता था स्वागत सत्कार।।
इसकी छाया तले सुरक्षित, रहे सदा सब ही इन्सान।
अग्रोहा से अग्रसेन का, गूंजेगा अब गौरव गान।।

संशय कहीं नहीं था मन में, जन-जन में देखा विश्वास।
हरभज शाह, लक्खी बनजारे का, अग्रोहा में है इतिहास।।
कोई हृदय उदास नहीं था और न मुख कोई निस्तेज।
अपनी-अपनी आन निभाने को, रहते थे सब ही तेज।।
धर्म ध्वजा का इस धरती पर, होगा फिर सच्चा सम्मान।
अग्रोहा से अग्रसेन का, गूंजेगा अब गौरव गान।।

भर देगी आलोक विश्व में, अग्रोहा से जली मशाल।
कर देगी यह शान्त सभी, मन में आये भीषण भूचाल।।
समय यही आगे बढ़ने का, समझो नहीं स्वयं को हेय।
दृढ़ निश्चय से बढ़ने वाले, हो जाते हैं स्वयं अजेय।।
अग्रोहा का धाम पांचवां, अग्रवंश की होगी शान।
अग्रोहा से अग्रसेन का, गूंजेगा अब गौरव गान।।

महालक्ष्मी की कृपा हो रही, मंदिर अब बन जायेगा।
सरस्वती की पुण्य कृपा से, कालेज भी खुल जायेगा।।
अग्रसेन की पावन नगरी, अग्रोहा बस जायेगा।
प्रभु की इच्छा पूरी होगी, अग्रवंश हर्षायेगा।।
मां शीला का अद्‌भूत मंदिर तिलकराज की है पहिचान।
अग्रोहा से अग्रसेन का, गूंजेगा अब गौरव गान।।

अपना पावन धाम

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

अग्रोहा की पुण्य भूमि यह, अपना पावन धाम।
महालक्ष्मी व सरस्वती की, प्रतिमा यहाँ ललाम।।
अट्ठारह गण राज्य यहाँ पर मिलजुलकर चलते थे।
पुत्रवत् श्री अग्रसेन का प्रेम सभी पाते थे।।
अट्ठारह गणपतियों द्वारा छटा यज्ञ की छाई।
पशु बलि कर त्याग यज्ञ में अहिंसा थी अपनाई।।
अट्ठारह ऋषि गुरु बने थे, हर गणपति यजमान।
गणपतियों को गुरु कृपा से, मिले थे गोत्र महान।।
राज-काज की मर्यादा का सभी जगह था नाम।
अग्रोहा की पुण्य भूमि यह अपना पावन धाम।।
एक गोत्र में भाई-बहिन है अन्य गोत्र असनाई।
गोत्र प्रथा की सुन्दर रीति, शासन ने अपनाई।।
विवाह-सूत्र में बन्धन हेतु अन्य गोत्र अपनावें।
संगठन-सूत्र में बंधे रहें यह सुन्दर भाव जगावें।।
रक्त शुद्धता की खातिर, आवश्यक इसको माना।
सुसन्तान बनेगी इससे, सत्य सभी ने जाना।।
रोटी बेटी की मर्यादा दे शक्ति निष्काम।
अग्रोहा की पुण्य भूमि यह, अपना पावन धाम।।
अग्रोहा में आगन्तुक को मिलता था सम्मान।
एक रुपैया ईंट एक दे, करते थे सम्मान।।
हरभज शाह, लक्खी बनजारे का देखो इतिहास।
संशय कहीं नहीं था मन में सबमें था विश्वास।।
अग्रसेन की धर्म ध्वजा फिर से यहाँ फहराई।
प्रेम, दया, ममता-समता की पावन ज्योति जगाई।।
अग्रवंश की शान बनेगा, यही पाँचवां धाम।
अग्रोहा की पुण्य भूमि यह, अपना पावन धाम।।

तीखा किन्तु सत्य

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

सामाजिक संगठन
केवल गठबन्धन
न बनें
पद लोलुपता के,
नेता व चौधरी बनने के।
कहना है तो कहें
सुनना है तो सुनें
पुकार–
गरीब असहाय भाइयों की,
दहेज के कारण
अनब्याही कन्याओं की !
अपना पेट भरने पर
सब सुखी होते हैं,
पर पड़ोसी के भूखे सोने पर
जिसको नींद नहीं आती–
वह मानव है,
सज्जन है,
और सामाजिक भी।

विवाह के अवसर पर

भगड़ा (टुईस्ट) नाच बन्द करें।

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

क्योंकि ?
यह :
बढ़ावा देता है–
अशिष्टता को,
चोरों और जेब कटों को,
मदिरापन को।
नष्ट करता है–
धन को,
समय की पाबन्दी को,
मान मर्यादा को,
अनुशासन को।
जन्म देता है–
विवादों व
झगड़ों को,
ईर्ष्या और द्वेष को।

जी तो — शान्ति से क्रोध को, भलाई से बुराई को।।
शौर्य से दुष्टता को, सत्य से असत्य को।।

दिखायेंगे न देखेंगे

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

दिखायेंगे न देखेंगे,
बतायेंगे न पूछेंगे।
नकद राशि का हम बिल्कुल,
प्रदर्शन बन्द कर देंगे।
न होगी ईर्ष्या इससे,
न हानि भी रहे इससे।
व्यर्थ की खेंचा-खेंची से,
सभी इज्जत बचायेंगे।
जिसमें है नहीं क्षमता,
करें क्यों उससे निर्ममता।
माया आनी जानी है,
गुणों की चाह रक्खेंगे।
नकद जो बहुत चाहते हैं।
वधु अनमेल पाते हैं।
वधु सुयोग्य पाने को
लोभ हम बिल्कुल त्यागेंगे।
दिखायेंगे न देखेंगे,
बतायेंगे न पूछेंगे।

दहेज

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

दहेज क्या है?
एक विवशता है
प्रतिस्पर्द्धा है
लड़की व लड़के को
देने के बहाने,
अहं भाव का प्रदर्शन है।
दिखावे की होड़ में
पिस रहे हैं सभी
कुप्रथा है–दूर करो
कहते हैं सभी।
अपनी बारी आने पर
मौन हैं,
आने दो,
फिर देखा जायेगा।
योग्य कन्याएं,
होने वाली गृह लक्ष्मियां
(दहेज) पैसे के अभाव में,
विवश हैं–
अयोग्य, अशिक्षित, अनमेल
प्रौढ़ के पाणि-ग्रहण को।

सु ख — पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख पर्याप्त माया।
तीसरा सुख सुलक्षणा नारी, चौथा सुख पुत्र आज्ञाकारी।।

सबको ब्याह रचाना है

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

सबके लड़के, सबके लड़की, सबको ब्याह रचाना है।
अहंकार को छोड़ो भाई, यह दिन सबको आना है।।
जाति-कुल की मर्यादा को, सुन्दर सबल बनाना है।
सबके लड़के, सबके लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

कुल अनुरूप वधु-वर खोजो, देखो-भालो, ब्याह करो।
आडम्बर को छोड़ो भाई, सुन्दर सादा ब्याह करो।।
जन्म-जन्म के इस बन्धन में, सबको, ही बंध जाना है।
सबके लड़के, सबके लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

घर व्यापार पढ़ाई देखो, लड़के-लड़की दोनों की।
सामंजस्य जहाँ हो जाये, शादी कर दो दोनों की।।
सामाजिक मर्यादा है यह, सबको इसे निभाना है।
सबके लड़के, सबके लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

रीति-रिवाज के चक्कर छोड़ो, रस्में कुछ तो खत्म करो।
अपव्यय पैसे और समय का, भाई कुछ तो खत्म करो।।
व्यर्थ दिखावा और प्रदर्शन, मिलकर दूर हटाना है।
सबके लड़के, सबके लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

तड़क-भड़क से गाजे-बाजों की संख्या में कमी करो।
सौम्य भाव के चलें बाराती, गरिमा हित कुछ यत्न करो।।
मदिरा पीना, नाच नाचना, आदत बुरी छुड़ाना है।
सबके लड़के, सबके लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

❑❑

चर्चा अब बेकार है !

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

जाति के गौरव गीतों का गाना अब बेकार है।
वैश्य जाति के आदर्शों की चर्चा अब बेकार है।। चर्चा अब निस्सार है।।

मांस और मदिरा सेवन से, न जिनका कोई नाता था।
प्याज, टमाटर, लाल दाल तक, घर में नहीं सुहाता था।
आज उन्हीं के मन को भाता, मुर्गा और मुसल्लम भी।
होटल में खाने-पीने की, बातें अब बेकार हैं।। चर्चा अब...

समता का आदर्श भाव जहाँ पहले-पहल मिला था।
पर-हितकारी जन-हितकारी भावों का मेल मिला था।।
आज असमता, भेद-भाव का बीज यहाँ पनपा है।
निर्धन-बन्धु का अब अपने नहीं होता सत्कार है।। चर्चा अब ...

फर्मों के रिश्ते होते हैं लड़का-लड़की गौण हैं।
आज गुणों की चर्चा करना धन के कारण गौण है।।
दहेज-दिखावा और प्रदर्शन नित ही बढ़ता जाता है।
जीवन-साथी की बात छोड़ अब शादी बना व्यापार है।। चर्चा अब...

जिनकी साक्षी सदा सही मानी जाती थी।
राज्य व्यवस्था में जिनकी अच्छी ख्याति थी।।
भ्रष्टाचारी घूसखोर कह आज कलंकित हैं।
गिरते आचरणों के कारण नित होता अपकार है।। चर्चा अब...

जाति के गौरव गीतों का गाना अब बेकार है।
वैश्य जाति के आदर्शों की चर्चा अब बेकार है।। चर्चा अब...

❑❑

धर्म वही जो . . .

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

धर्म वही जो धारण करने योग्य मार्ग बतलाता है।
कर्म वही जो सद्भावों की सुन्दर राह दिखाता है।।

निर्भय होकर कर्म करो व प्राणी-मात्र पर दया करो।
दीन-दु:खी को गले लगाओ समता का व्यवकार करो।।

ऋषि-मुनि व महाजनों की वाणी का गुण-गान करो।
फल की इच्छा त्याग हृदय से सौम्य भाव से कर्म करो।।

सद्कर्मों सेवा भावों से नर उत्तम फल पाता है।
धर्म वही जो धारण करने योग्य मार्ग बतलाता है।।

धर्म की रक्षा यदि करोगे धर्म मार्ग दिखलायेगा।
सत्य, अहिंसा, प्रेम, त्याग का सुन्दर मार्ग बतायेगा।

महावीर गौतम गांधी की अहिंसा को अपनायेंगे।
राम कृष्ण के कर्म, मार्ग से जीवन में सुख पायेंगे।।

उत्तम करनी से नर जग में, उत्तम नाम कमाता है।
धर्म वही जो धारण करने योग्य मार्ग बतलाता है।।

भगवान को साक्षी मानकर संसार में व्यवहार करो तो जीवन सुखी होगा।
अपने भीतर परमात्मा की उपस्थिति को पहचानो, हमेशा यह विश्वास करो कि तुम्हारे सब कर्मों को भगवान देख रहा है।।

हम गौवध बन्द करायेंगे

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

'हम व्रत धारे आज यहाँ, गौवध को बन्द करायेंगे।'
गोपाल कृष्ण की भूमि का, सब मिलकर मान बढ़ायेंगे।
इस देव भूमि भारत भर में, गौरक्षा पक्ष मनायेंगे।। हम गौवध....

जो पृथ्वी का आधार बनी, सींगों पर भार सम्भाले है।
जिसके तन में कोटि-कोटि, देवों का देवालय है।
उस देव मातृ की रक्षा को, गौरक्षा पक्ष मनायेंगे।।2।। हम गौवध....

जिसने तृण भूसा खा-खाकर, है मीठा दूध दिया हमको।
जिसका घृत मक्खन खा-खाकर, है अद्भुत शक्ति मिली हमको।
उस शक्ति दायिनी माता की, रक्षा का पक्ष मनायेंगे।।3।। हम गौवध....

जो गोबर देती बहुमूल्य हमें, खेतों में खाद लगाने को।
जो दूध दही मक्खन देती, हम सबका पोषण करने को।
उस सर्व पोषिका माता की, रक्षा का पक्ष मनायेंगे।।4।। हम गौवध....

जिसके बेटे है बैल अरे, खेतों में जोते जाते हैं।
रहट चरस और गाड़ी से, जो अगणित सुख पहुंचाते हैं।
उस बैल-दायिनी माता की, रक्षा का पक्ष मनायेंगे।।5।। हम गौवध....

जिसके उपहारों के बदले, हम सौ-सौ शृंगार बनाते हैं।
जिसके वैभव की छाया में, रंग रलियाँ खूब मनाते हैं।
उस मातृ तुल्य गौ माता की, रक्षा का पक्ष मनायेंगे।।6।। हम गौवध....

गौ माता की रक्षा होवें, इस दृढ़ व्रत को अपनायेंगे।
गौर रक्षा पक्ष मनाकर के, जनमत की विजय करायेंगे।
माँ की रक्षा के खातिर, गौ रक्षा पक्ष मनायेंगे।।7।। हम गौवध....

संकल्प

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

हम अशिक्षा को जग से हटा जायेंगे। होगा जीवन सफल जब पढ़ा जायेंगे।।1।।
साक्षरता की फिर शान होगी बुलन्द। जबकी शिक्षा को दुनिया में फैलायेंगे।।2।।
अब चलायेंगे शिक्षा का जब दौर हम। पग अशिक्षा के जग से उखड़ जायेंगे।।3।।
सारी शक्ति लगायेंगे इस काम पर। शेष रख न कसर हम कोई जायेगें।।4।।
जब अविद्या अशिक्षा हटा देंगे हम। ज्ञान विद्या का घर-घर में भर जायेंगे।।5।।
होगा भारत जहां का तब फिर से गुरु। ज्ञान दीपक जब घर-घर जला पायेंगे।।6।।

हिन्दी दिवस

एकता का सूत्र हिन्दी देश का सम्पर्क हिन्दी।
आओ मनाएँ आज मिलकर देश सारा दिवस हिन्दी।।
देश के नेता मनीषी, जब हुए एकत्र सारे।
भावना थी एक सबमें, देश के चमके सितारे।।
राष्ट्र भाषा देश की सम्मान पाए आज हिन्दी।। आओ मनाएँ.....
राष्ट्र का वह स्वर्ण क्षण जा नहीं सकता भुलाया।
हिन्द ने जब हिन्दी को अपना बनाया।।
लोक प्रियता में पगी, अनुपम बनी आधार हिन्दी।। आओ मनाएँ.....
उदारता व ग्राह्यता के गुण संजोए।
एकता के सूत्र में सबको पिरोए।।
स्वतंत्रता संग्राम की ज्योति है हिन्दी।। आओ मनाएँ.....
सन्तों, भक्तों और कवियों की ये वाणी।
देश भक्तों को लिए संग्राम में कूदी जवानी।।
उच्च गुण व भावना को दे रही अभिव्यक्ति हिन्दी।। आओ मनाएँ.....
अंग्रेजी के मोह में आज हम सब खो गये।
अंकल, आंटी और डैडी आज घर-घर हो गए।
हो उपेक्षित देश में सिसके हमारी आज हिन्दी।। आओ मनाएँ.....
संसद भवन में यह दिवस मनता रहा है।
उच्च गौरव राष्ट्र का पाता रहा है।
आज देखो मन रहा इस हाल में यह दिवस हिन्दी।। आओ मनाएँ.....

जन्म-रहस्य

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

क्यों रोते हैं हम बार-बार, जब जाने अपने भेद सार।
पाँच तत्वों के ये भवन बने हैं, जिसमें नौ-नौ लगे द्वार।।

इन भवनों के अन्दर आकर, रहता एक मुसाफिर।
जड़ से चेतन इन भवनों को, करता वही मुसाफिर।।
जब वह मुसाफिर इन भवनों को, छोड़ कहीं है जाता।
चेतन से फिर जड़ में, इन भवनों का रूप बनाता।।
इसी रूप की अदल बदल में, हम हैं रोते हँसते।
अज्ञानी हैं नहीं अकल हम, समझ नहीं यह सकते।।
दिन-दिन बदले वस्त्र किन्तु हम, समझ न कुछ भी पाते।
सही भेद है इस जीवन का, क्यूं न समझ हम जाते।।
यही भेद यदि समझ सकें, तो सच्चा सुख हम पावें।
राग द्वेष और शोक सभी, को मारे दूर भगावें।।
फिर सच्चा सब ज्ञान प्राप्त, कर ईश्वर के गुण गावें।
सच्ची श्रद्धा सच्ची भक्ति, कर नित-नित इसे रिझावें।।
इस घर में जो बसा मुसाफिर, वही है ईश्वर सच्चा।
यह जानों सब मिलकर, समझो क्या बूढ़ा क्या बच्चा।।
रुह, आत्मा, सोल आदि हम, देते नाम हैं इसको।
सिर्फ नाम का अंतर कर दें, दोष कहो किस-किसको।।
कृष्ण मुरारी ने अर्जुन को, इसका भेद बताया।
नहीं शस्त्र से कटा, अग्नि से कभी नहीं जल पाया।।
विष्णु को है आज यही, सब गीता रहस्य बताती।
पानी नहीं डुबोता इसको, वायु न इसे सुखाती।।
जीर्ण वस्त्र की तरह आत्मा, यह शरीर तज जाती।
नये वस्त्र की तरह आत्मा, नयी देह है पाती।।

फिर क्यों रोते हैं हम बार-बार, जब जाने अपने भेद सार।
पाँच तत्वों के ये भवन बने हैं, जिसमें नौ-नौ लगे द्वार।।

परिभाषा सज्जनता की

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

सज्जन की सज्जनता किसमें, सज्जन की सज्जनता इसमें।।
मीठा बोले, सुख पहुंचाये, दु:ख न दे, प्राण चाहे जाये।।
नहीं करे विरोध किसी का भी, चाहे हो बात विरोधी भी।।
सुनता वह बातें सबकी, चाहे वह आस्तिक नास्तिक है।।
वह बातें अधिक न करता है, वह सबको अवसर देता है।।
यदि वह अच्छा कुछ भी करता है, तो मन में नहीं उभरता।।
वह सबकी बात बताता है, अपनी ही नहीं जताता है।।
नीची बात न करता है, उल्टे सबका मन हरता है।।
अरिदल को मित्र बनाता है, रूठे को स्वयं मनाता है।।
यदि जग कष्ट उसे पहुँचाता है, वह बदला नहीं चुकता है।।
यदि सुखी न सुख में होता है, तो दु:खी न दु:ख में होता है।।
सुख दु:ख जो कुछ भी मिलता है, कर्मों का फल ही मिलता है।।
यदि कभी लड़ाई होती है, तो खत्म तुरन्त ही होती है।।
वह जब जो कुछ भी कहता, अपने पर रख कर कहता है।।
इन बातों पर जो चलता है, वह सज्जन ही तो होता है।।

किसी के काम जो आये, उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए, उसे इंसान कहते हैं।
अपना पेट भरने को तो, पशु भी पेट भरते हैं।
मनुज जो बाँट कर खाए, उसे इंसान कहते हैं।

हम सैनिक हिन्दुस्तान के

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

हम सैनिक देश महान के, हैं पक्के अपनी आन के।
नहीं घुसपैठ को जानते, हम शेर खुले मैदान के।।
हम सैनिक हिन्दुस्तान के.....

पाकिस्तानी घुसपैठ हो, चाहे सैनिक आक्रमण।
धुआँ-धार मचाकर के, बढ़ रहे हैं हमारे सैनिक गण।।
शत्रु दोड़ा भाग के, लो पड़ गये लाले जान के।। हम सैनिक.....

धोखा फरेब के चक्कर, हम तनिक नहीं भरमायेंगे।
पास पड़ोसी देश समझ, तुमको अब मार्ग दिखायेंगे।।
जान तुम्हारी लेकर के, कर देंगे कब्रिस्तान के।। हम सैनिक.....

शर्मन पैटन टैंक तुम्हारे, ध्वस्त सभी हमने करने।
वायुयान या पैदल सेना, तनिक नहीं देंगे बढ़ने।।
हम गोली उनको मार दें, जो आवें पाकिस्तान के।। हम सैनिक.....

तिथवाल या कारगिल हो, चाहे दर्रा हाजीपीर।
छम्ब, पूंछ कसूर क्षेत्र में, रखेंगे हम पूरी धीर।।
तोप धड़ाके दे-देकर, हम बढ़ते सीना तान के।। हम सैनिक.....

श्रीनगर जम्मू फाज़िलका, अम्बाला व अमृतसर।
फिरोजपुर व जोधपुर का, बदला हम लेंगे डटकर।
रावलपिंडी में कर देंगे, दृश्य सभी श्मशान के।। हम सैनिक.....

चाऊ-माऊ की सेना को भी, पंख लगे हैं अब उगने।
भेड़-भेड़ियों की चोरी के, दोष लगा हम पर मढ़ने।
ये झूठ झमेले के चक्कर हम, सुलटें आगे आन के।।
हम शेर खुले मैदान के, हम सैनिक हिन्दुस्तान के।।

शिक्षक : नये परिवेश में

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

नई सुबह का नया सबेरा, नई चेतना लाया है।
जागो जागो शिक्षक प्यारे, तुमको आज पुकारा है।।

तुम्हीं तो हो जिसके कारण, भारत गुरु कहाया था।
तुम्हीं ने तो ज्ञान विश्व को, पहले पहल सिखाया था।।
आज उसी की खातिर तुमको, भारत ने ललकारा है।।
जागो जागो शिक्षक प्यारे, तुमको आज पुकारा है।।1।।

जो भी कोई जब भी कोई, देश पै काबू पाता है,
शिक्षक द्वारा ही आकर के, उलट फेर करवाता है।
मैकाले ने भारत आकर, शिक्षक को दुतकारा है।।
जागो जागो शिक्षक प्यारे, तुमको आज पुकारा है।।2।।

अब भारत गणतन्त्र हुआ है, इसकी आन निभाना है।
हर बालक के द्वारा तुमने, घृणा भाव भगाना है।
प्रेम परस्पर बढ़े सभी में, यह कर्तव्य तुम्हारा है।।
जागो जागो शिक्षक प्यारे, तुमको आज पुकारा है।।3।।

राष्ट्र एकता की भारत में, तुमने नींव जमानी है।
भाषा प्रान्त के झगड़े जितने, सबकी नींव हिलाना है।
देश भक्त कर्तव्य परायण, होकर ही निस्तारा है।।
जागो जागो शिक्षक प्यारे, तुमको आज पुकारा है।।4।।

राष्ट्रपति जो कभी गुरु थे, आज गुरु पद पाया है।
भारत के जन-जन ने देखो, कितना प्रेम दिखाया है।।
सम्मान देश में हो शिक्षक का, सबने इसे विचारा है।।
जागो जागो शिक्षक प्यारे, तुमको आज पुकारा है।।5।।

❑❑

यह देश है मेरा वीरों का, है वीर प्रसूता यह भूमि

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

रामचन्द्र जी इस धरती पर पुरुषोत्तम कहलाते हैं।
मात-पिता बन्धु पत्नी से शुभ व्यवहार सिखाते हैं।
राजा और प्रजा सम्बन्धों को वे हमें बताते हैं।
धोबी मात्र के आक्षेप से, सीता को तज जाते हैं।
भक्तों की है अभयदायिनी रामचन्द्र की यह भूमि।।1।।

कृष्णचन्द्र ने इस भूमि पर, अगणित खेल रचाया है।
गीता में उपदेश अमर दे निर्भय हमें बनाया है।
कर्म करो फल आप मिलेगा, सबको यह समझाया है।
अजर आत्मा, अमर आत्मा, ऐसा रहस्य बताया है।
जन-जन की कल्याणमयी है, कृष्णचन्द्र की यह भूमि।।2।।

जीवन-मरण रोग के चक्कर में यह मानव उलझ रहा।
भूल-भुलैया की दुनिया में, धीरे-धीरे झुलस रहा।
एक रात फिर इसी सोच में, घर से था प्रस्थान किया।
जीएँ और जीने दें सबको ऐसा मन्त्र महान दिया।
बुद्धं शरणं गच्छामि की प्रेरक, यह भारत-भूमि।।3।।

छोटे-बड़े सभी जीवों का, जीवन एक समान है।
सुख-दुःख की सबको अनुभूति, होती एक समान है।
कीट-पक्षी की बात न केवल पौधे में भी जीव है।
'अहिंसा परमोधर्म' हमारा इस जीवन की नींव है।
महावीर के उपदेशों की साधक ये मेरी भूमि।।4।।

राम की चिड़िया खेत राम का, आओ और खा जाओ।
सच्चा सौदा प्रेम त्याग का, जीवन में अपनाओ।
गुरु नानक की वाणी को इस दुनिया में फैलाओ।
ऊंच-नीच का चक्कर छोड़ो, मानव को अपनाओ।
देश धर्म के रक्षक गुरुओं की माता है ये भूमि।।5।।

महाराणा प्रताप देश में, योद्धा वीर महान् हुये।
हल्दी घाटी के रण आंगन में, शत्रु बड़े हैरान हुए।
छोड़ राजसी ठाट-बाट सब, जंगल में आवास किया।
घास मूल की रोटी खाई पृथ्वी पर, विश्राम किया।
उस गर्वीले देशभक्त की जन्मदायिनी यह भूमि।।6।।

नाटे कद के वीर शिवा की गाथाओं पर गर्व हमें।
देशभक्ति और गौ-भक्ति की, सेवाओं पर गर्व हमें।
अफजल खाँ मक्कारी से, जब उन्हें हराने आया था।
समझ गए वे मक्कारी को, यमपुर उसे पठाया था।
शेर शिव की युद्ध कला की, कलामयी है यह भूमि।।7।।

आर्य विश्व में श्रेष्ठ जाति है, यह सबको समझाया।
ईश्वर एक उसी को पूजो, सत्य हमें समझाया।
पाखण्डों का खण्डन करके ज्ञान मार्ग बतलाया।
ओम ध्वजा को लिया हाथ में, वेद सत्य बतलाया।
सत्यार्थप्रकाश के अमर रचयिता दयानंद की यह भूमि।।8।।

'रामचरित मानस' को रचकर जन-जन का कल्याण किया।
रीति-नीति और मर्यादा का सबको अद्भूत ज्ञान दिया।
पुरुषोत्तम श्रीराम गुणों का सुन्दर सरस बखान किया।
हिन्दू मात्र के घर-आंगन में हिन्दी को सम्मान दिया।
'रामचरित' के अमर रचयिता तुलसीदास की यह भूमि।।9।।

लोकमान्य गंगाधरजी का कौन भला जग में सानी।
उनके साहस ज्ञान गरिमा का भारत है अभिमानी।
जन्म-सिद्ध अधिकार हमारा, हम स्वराज्य ले मानेंगे।
गणेश, शिवाजी उत्सव रच-रच देश भक्ति ले आवेंगे।
अमर 'केसरी' के सम्पादक वीर तिलक की यह भूमि।।10।।

सत्य अहिंसा प्रेम त्याग का, जीवन भर उपदेश दिया।
छोड़ विदेशी चकाचौंध सब, स्वदेशी का मंत्र दिया।।
अत्याचारी शासक दल को, क्षमा उन्होंने कर डाला।
सत्य अहिंसा के बल बूते, देश निकाला कर डाल।।
ऐसे साधक सन्त महात्मा गान्धी की है यह भूमि।।11।।

सन् पच्चीस की विजय दशमी को, संघ मंत्र उपजाया।
त्याग पतस्या का जन मन में, नव उत्साह जगाया।।
हिन्दू राष्ट्र अनादि अनन्ता, वेदों में बतलाया।
हिन्दू हिन्दुस्तान देश का, हित चिन्तक समझाया।।
आर. एस. एस. के अमर रचयिता, हेडगेवार की यह भूमि।।12।।

समाज स्वस्थ बने यह कैसे, ऐसी चिन्ता लिए हुए।
अण्डमान के कारावास से, जो न विचलित जरा हुए।।
उग्र विचार भाषण लेखों को, युवकों का आह्वान किया।
हिन्दू, हिन्दी, राष्ट्र भक्ति के, भावों का संचार किया।।
देव स्वरूप अमर सेनानी, परमानन्द की यह भूमि।।13।।

पुरुषोत्तम मास में जन्म लिया, वे पुरुषोत्तम कहलाए।
पुरुषोत्तम के योग्य सभी गुण, उनमें रहे समाए।।
भारत रत्न की मिली उपाधि, देश भर मन भाए।
दृढ़ संकल्प आत्म बल उनका, सबको राह दिखाए।।
ऋषि तुल्य हिन्दी के साधक, टंडन जी की यह भूमि।।14।।

अग्रसेन महाराज की अग्रोहा राजधानी थी।
एक ईंट और एक रुपये की अद्भुत सत्य कहानी थी।
समाजवाद का ढ़ोल न पीटा, पर समता लासानी थी।
ऊँच-नीच का भेद नहीं था, नहीं कहीं मनमानी थी।।
अग्रसेन जी का अग्रोहा अग्रवाल की है भूमि।
यह देश है मेरा वीरों का, है वीर प्रसूता यह भूमि।।15।।

अग्रवालों उठो वक्त खोओ नहीं

अग्रवालों उठो वक्त खोओ नहीं,
बहुत सोये हो गलफत में, सोओ नहीं,
देश अपने में, जिनका अटल राज्य था,
वैश्य जाति के सिर को जो सरताज था,
थाती उनसे मिली, ये भुलाओ नहीं।। अग्रवालो उठो.....

मातृ लक्ष्मी का हमको यह वरदान है,
एकता से जो रहता वह धनवान है,
धन के चक्कर में हम आप ऐसे पड़े,
क्या थे, क्या हो गये, भाई-भाई लड़े,
फूट के बीज अब आगे को बोओ नहीं।। अग्रवालो उठो.....

क्या कमी है, विधाता ने सब कुछ दिया,
धन दिया, बल दिया, बुद्धि दी, गुण दिया,
कमी है बड़ी, यह कमी खल रही,
आपसी फूट अपने ही घर पल रही,
फूट जड़ से उखाड़ो रे, सोओ नहीं।। अग्रवालो उठो....

अग्र के वंशजों, अग्र के वंशजों,
अग्रगामी सदा अब भी आगे बढ़ो,
छोड़ दो दुश्मनी, मित्रता सीख लो,
खो दिया जो, उसे बढ़कर हासिल करो,
अपनी करनी पै आगे को रोओ नहीं।। अग्रवालो उठो...

दान देने की हम सबसे ताकत बड़ी,
'भामाशाह' से जुड़ी है हमारी कड़ी,
जिनके सहयोग से सारी सेना लड़ी,
उसके वंशज हैं, फिर फूट कैसे पड़ी,
फूट के बीज आगे को बोओ नहीं।। अग्रवालो उठो.....

❑❑

श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली

कार्य विवरण

श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली का गठन कुछ उत्साही तथा प्रकाशन में रुचि रखने वाले अग्रवाल सामाजिक कार्यकत्ताओं द्वारा जुलाई 1976 में किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य अग्रवाल समाज को प्रकाशन के माध्यम से खोजपूर्ण जानकारी एवं तथ्यों को एक स्थान पर संजोकर ज्ञानवर्धन करने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के प्रति सचेत करने, पारस्परिक बन्धुत्व एवं सहयोग के लिए प्रेरित करने, आत्मगौरव तथा कर्त्तव्य का भान कराने हेतु एवं सामाजिक संस्थाओं में परस्पर सौहार्द एवं सामंजस्य स्थापित कर उनके कार्य को प्रोत्साहन देना हैं

संस्था सम्बद्धता

- अग्रोहा विकास ट्रस्ट
- अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन
- दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन

प्रकाशन

- समय-समय पर संग्रहणीय स्मारिकाओं का प्रकाशन
- अग्र-काव्य (120 कविताओं का संग्रह)
- परिचय पुस्तिका (वैश्य सांसद एवं पार्षद परिचय)
- अग्रोहा-दर्शन
- अर्चना, उपासना
- महावीर हनुमान, दुर्गा कवच
- अग्र-गान

चित्र सैन गुप्ता एडवोकेट
प्रधान
15-पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63
दूरभाष : नि. 5418081
का. : 7225026

विष्णु चन्द्र गुप्त
महामंत्री
1958-मुल्तानी मोहल्ला,
रानीबाग, दिल्ली-34
दूरभाष : 7020214

आभार

मुझे क्या पता था कि एक दिन मेरी निःस्वार्थ, स्वान्तः सुखाय समाज सेवा, ज्ञातव्य, पठनीय एवं संग्रहनीय लेखन तथा प्रकाशन का राष्ट्रीय स्तर पर कोई मूल्यांकन कभी होगा। 13 अक्टूबर 2000 को शरद् पूर्णिमा मेले पर सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मान के इस अवसर को मैं परम पिता परमेश्वर की महान अनुकम्पा मानकर उनके सम्मुख नत मस्तक हूँ।

मैं अत्यंन्त आभारी हूँ निम्न महानुभावों का जिन्होंने इस सम्मान हेतु अपनी संस्तुति अग्रोहा विकास ट्रस्ट को प्रेषित की–

* **श्री ओम प्रकाश अग्रवाल**–सम्पादक युवाअग्रवाल एवं महामंत्री राष्ट्रीय वैश्य परिषद
* **श्री बाबूराम गुप्ता**–अध्यक्ष, दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन
* **श्री चित्रसेन गुप्ता एडवोकेट**–अध्यक्ष श्री अग्रसेन समिति दिल्ली एवं संगठन मंत्री अग्रवाल सभा पश्चिम विहार
* **श्री नन्दकिशोर गर्ग**–विधायक दिल्ली सरकार
* **श्री रामेश्वर दास गुप्ता**–संस्थापक अग्रोहा विकास ट्रस्ट
* **श्री जयभगवान गुप्ता**– प्रधान, वैश्य संगठन सभा सदर बाजार एवं महामंत्री महाराजा अग्रसेन आश्रम ट्रस्ट हरिद्वार
* **श्री घनश्यामदास गुप्ता**–समाजसेवी, साहित्यकार, पत्रकार व लेखक (भोपाल)
* **श्री चन्द्र मोहन गुप्ता**–सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता एवं अग्रोहा तीर्थ के पूर्वसंपादक

मैं आभारी हूँ अग्रोहा विकास ट्रस्ट की पुरस्कार एवं सम्मान समिति के अध्यक्ष **श्रीमान् नन्द किशोर गोइन्का**, संयोजक **डॉ. चम्पा लाल गुप्त** एवं समिति के अन्य सदस्यों का जिन्होंने मेरे आवेदन एवं कार्य का मूल्यांकन कर मेरा चयन पुरस्कार हेतु किया। मैं आभारी हूँ माननीय **सत्यनारायण बंसल** प्रांत संघ चालक, माननीय **दुलीचन्द गुप्ता** विभाग संघचालक झंडेवालान विभाग का जिन्होंने मुझे प्रारंभ में हिन्दी व अग्रवाल समाज के कार्य और संगठन के लिए प्रेरित किया। मैं आभारी हूँ अपने सभी शुभ-चिन्तकों, मित्रों और सहयोगियों का जिन्होंने पुस्तिका में अपने प्रेरक वचन और संस्मरण प्रकाशनार्थ प्रेषित किए।

मैं आभारी हूँ समय-समय पर विशेष आर्थिक सहयोग देनेवाले समस्त बंधुओं का सुप्रसिद्ध दानवीर व परामर्शक महाराजा अग्रसेन हस्पताल के **श्री शिवदत्त गुप्ता**, दानवीर **श्री राधाकृष्ण गुप्ता** (चश्मे वाले), उद्योगपति एवं वरिष्ठ उप-प्रधान महाराजा अग्रसेन हस्पताल के **श्री गजानन्द सांवड़ियां** एवं उद्योगपति व समाज सेवी **श्री गिरिलाल गुप्ता** आदि का। मैं पुनः इस सम्मान के लिये अपने प्रेरक, मार्ग दर्शक महानुभावों और समस्त मित्रों व सहयोगियों के प्रति अपनी कृतज्ञता एवं आभार व्यक्त करता हूँ।

आपका ही

विष्णु चन्द्र गुप्त

सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मान समारोह पर हार्दिक शुभकामनाएं

" श्री विष्णु जी दिल्ली के जाने माने सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। अग्रवाल समाज के कार्यक्रमों में सहर्ष सदैव उपस्थित रहते हैं। अग्रवाल सभा पश्चिम विहार के कार्यक्रमों में इनके विचारों और कविताओं को सुना है। आपको अग्रसेन–अग्रोहा आदि की पर्याप्त जानकारी है।"

उद्योगपति

गजानन्द सांवरिया

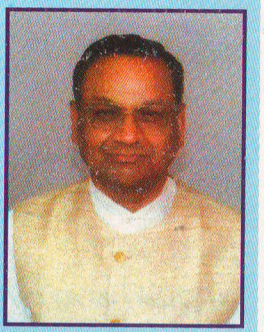

वरिष्ठ उपप्रधान : महाराजा अग्रसेन हॉस्पीटल, पंजाबी बाग

पूर्व प्रधान : अग्रवाल सभा, पश्चिम विहार

निवास : बी-1/143, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063 दूरभाष : 5585465

इनके अतिरिक्त आप अनेकों सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक संस्थाओं से भी सम्बन्धित हैं।

मै. एलाइड स्ट्रिप्स लि.

14–मनोहर पार्क, रोहतक रोड
नई दिल्ली-110063
दूरभाष : 5124049, 5432844

सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मान समारोह पर हार्दिक शुभकामनाएं

"श्री विष्णु जी वैश्य समाज के एक साफ-सुथरे सामाजिक चरित्र को उजागर करते हैं। आप स्पष्ट राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत हैं और द्वेष भाव से ऊपर उठकर राष्ट्रीय स्तर का चिन्तन करते हैं। मैंने आपकी रचनाएँ महाराजा अग्रसेन जी से सम्बन्धित सुनी हैं जो बहुत ही प्रेरणा दायक हैं।"

उद्योगपति

शिवदत्त गुप्ता

वरिष्ठ उपप्रधान : महाराजा अग्रसेन आश्रम, हरिद्वार-वृन्दावन

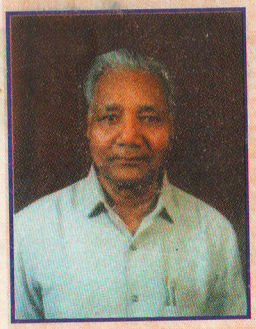

सदस्य सलाहकार बोर्ड : महाराजा अग्रसेन हॉस्पीटल, पंजाबी बाग

सदस्य गवर्निंग बॉडी : सुन्दर लाल जैन हॉस्पीटल, अशोक विहार

संरक्षक सदस्य : अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा

मंत्री : गीता भवन पंचायती धर्मशाला, कमला नगर

कोषाध्यक्ष : अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद, नई दिल्ली

कोषाध्यक्ष : समर्थ शिक्षा समिति (दिल्ली प्रदेश), दिल्ली

इनके अतिरिक्त आप अनेकों सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक संस्थाओं से भी सम्बन्धित हैं।

9-डी, कमला नगर, दिल्ली-110007
दूरभाष : 3953941, 3919438

2133, गायत्र लक्ष्मीनारायण अग्रवाल मार्ग, शक्ति नगर, दिल्ली-7 दूरभाष: 7242140